आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

नवम्बर 2024

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
30/-₹

मध्य-पूर्व की मानव त्रासदी और आधुनिक दुनिया का आडंबर

कहो, "क्या मैं आकाशों और धरती को पैदा करनेवाले अल्लाह के सिवा किसी और को संरक्षक बना लूँ? उसका हाल यह है कि वह खिलाता है और स्वयं नहीं खाता।" कहो, "मुझे आदेश हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे झुक जाऊँ। और (यह कि) तुम बहुदेववादियों में कदापि सम्मिलित न होना।"

(क़ुरआन, 6:14)

A Well Wisher

Rashid Bhai, Damoh (MP)

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
abuaniqa@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि

एक प्रति 30/- रु०	एक वर्ष 350/- रु०
दो वर्ष 670/- रु०	तीन वर्ष 950/- रु०
चार वर्ष 1200/- रु०	पांच वर्ष 1400/- रु०

आजीवन रु० 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न०
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
ASILA OFFSET PRINTERS
1299, KALAN MAHAL,
NEW DELHI-110002

संपादक : शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 34 अंक 05 नवम्बर 2024

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
फ़िलिस्तीनी संघर्ष और पश्चिमी देशों का आडंबर
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
क्या है आधुनिक नास्तिकता का वैचारिक आहार ?
डॉ. मुहम्मद रिज़वान

सौंदर्य बोध 11
धर्म–"आशा" और "उद्देश्य" की नींव
संपादन प्रभाग

मुख्य स्तंभ 15
मध्य-पूर्व की मानव त्रासदी और आधुनिक दुनिया का आडंबर
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 19
फ़िलिस्तीनियों के अस्तित्व की रक्षा और संयुक्त राष्ट्र की बेचारगी
शिवकांत शर्मा

समाधान 21
अभेद्य नहीं है षड्यंत्र का यह दुश्चक्र
सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी

कविता 25
पहचान-पत्र
महमूद दरवेश

मंथन 26
मिलावट का ज़हर
डॉ. प्रदीप कुमार

पर्यावरण 29
ई-कचरे के ढेर पर
जितेंद्र गौतम

विचारणीय 32
गाली देना ग़लत क्यों ?
अबू हस्सान

नज़रिया 33
धर्म, क़ानून और धार्मिक कट्टरता
गुलज़ार सहराई

प्रकाश स्तंभ 36
मनुष्य की विवशता और अभिलाषा
वहीदुद्दीन ख़ां

सेहत 39
सर्दी, खांसी, ज़ुकाम : मौसम के नखरे संक्रमण के ख़तरे
संपादन प्रभाग

करियर 41
कौशल में है अवसर
संपादन प्रभाग

कहानी 44
एटम बम
अमृतलाल नागर

आख़िरी पन्ना 48
हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) : मानवतावाद के अग्रदूत
डॉ. रफ़ीक़ अहमद

मूल प्रश्न



शिब्ली अरसलान

फ़िलिस्तीनी संघर्ष और पश्चिमी देशों का आडंबर

मध्य-पूर्व में ज़ायोनिस्ट इज़राइल के साथ फ़िलिस्तीनियों के जारी प्रतिरोध (Resistance) का एक साल पूरा हो गया है। फ़िलिस्तीनियों का ये संघर्ष अपनी ज़मीन, ज़मीरऔर सम्मान का संघर्ष है । फ़िलिस्तीन के प्रतिरोधी संगठन हमास के मूड से पता चलता है कि वे इस संघर्ष को निर्णायक मोड़ तक पहुंचाना चाहते हैं। 70- 80 साल फ़िलिस्तीनियों ने संवाद और 'शांतिपूर्ण वार्ताओं' के खेल भी देख लिए। 'ओस्लो समझौता' से लेकर 'अब्राहम अकोर्ड' तक का दौर फ़िलिस्तीनियों के लिए खुला फ़रेब बल्कि ताज़ियाना साबित हुआ। फ़िलिस्तीन का बच्चा-बच्चा ज़ायोनिस्ट इसराइल के धोके और प्रपंच की नीति को भली भांति समझ चुका है।

इस एक वर्ष के संघर्ष ने पश्चिमी मुल्कों के ढोंग और आडंबर का भी पर्दा फ़ाश किया है। अभी पिछले दिनों 2024 का अंतर्राष्ट्रीय नोबेल शान्ति पुरस्कार जापान के निहोन हिन्दांक्यो (Nihon Hindankyo) को 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु हमले की पृष्ठ भूमि में 'परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व' बनाने के प्रयासों के लिए दिया गया। ये कैसी दोहरी मानसिकता का परिचायक है कि एक तरफ़ पश्चिम परमाणु हथियारों से होने वाले विनाश को ख़त्म करने के प्रयासों पर शांति पुरस्कार बांट रहा है और दूसरी तरफ़ ज़ायोनिस्ट इज़राइल को फ़िलिस्तीनियों को मलबों में दफ़न करने के लिए पैसे और ख़तरनाक हथियार दे रहा है।

सात अक्टूबर की कार्रवाई को कुछ लोग हमास द्वारा जान बूझ कर युद्ध छेड़ने का दुस्साहस समझते हैं और इस तरह इज़राइल द्वारा ग़ज़्ज़ा पट्टी पर अंधाधुंध बमबारी को 'आ बैल मुझे मार' की संज्ञा देते हैं। ऐसा कहने वाले या तो बुज़दिल हैं या अत्यंत भोले-भाले। ये सब पहली बार नहीं हो रहा, ऐसा पिछले दशक में कई बार हो चुका है। अपनी ज़मीन और अपने ज़मीर के सौदा के ख़िलाफ़ कृतसंकल्प ये फ़िलिस्तीनी ना जाने किस मिट्टी से बने हैं कि कुछ ही महीनों और साल में दोबारा उठ खड़े होते हैं। इस बार सात अक्टूबर के 'अचानक हमले' का सहारा लेकर ज़ायोनिस्ट इस्राईल 'विक्टिम कार्ड' खेल रहा और दुनिया को गुमराह करने के मिशन पर लगा हुआ है। हमास के 'अचानक हमले' पर कुछ खुले ज़ेहन के लोग भी ज़ियोनिस्ट प्रोपेगंडे से भ्रमित हो रहे हैं। सोशल मीडिया की बहसों में कई बुद्धिजीवी ये तर्क देते हुए नज़र आ जाते हैं कि वर्षों से जब सब कुछ 'शांतिपूर्ण' गुज़र रहा था, दुनिया को लग रहा था कि 'अब माहौल में बेहतरी आ सकती है' तभी अचानक 5000 से अधिक मिसाइल इसराइल के ऊपर क्यों दागे गए? इसके अलावा जल मार्ग से हमले किए गए। कंक्रीट के मोटे-मोटे रूकावटों को ध्वस्त कर हमास के लड़ाकों ने रास्ता बनाया, इस तरह जंग फ़िलिस्तीनियों ने शुरू की।

हालांकि फ़िलिस्तीनियों को दुनिया से यही शिकवा है कि दुनिया ज़ायोनिस्ट प्रोपेगंडा तंत्र की ऐनक से देखती है, फ़िलिस्तीन का मुद्दा दुनिया भूलती जा रही थी। इज़रायिल और पड़ोसी अरब राज्यों के मध्य होने वाले हालिया 'अब्राहम एकॉर्ड'

से फ़िलिस्तीनी मायूसी के शिकार थे। यह नहीं भूलना चाहिए कि हमास की आक्रामकता की वर्तमान स्थिति फ़िलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ अति-दक्षिणपंथी नेतन्याहू सरकार द्वारा फैलाई गई ज़ायोनी आक्रामकता का परिणाम है, जिसने ख़ामोशी से पिछले सालों में बच्चों सहित हज़ारों लोगों की जान ले ली, फ़िलिस्तीनी महिलाओं की तौहीन करके उन्हें बंदी बनाया, जारी संघर्ष के दौरान होने वाले छोटे युद्ध विराम के समझौते के तहत इज़राइल की जेलों से रिलीज़ हुई फ़िलिस्तीनी महिलाओं की जेल रूदाद सुनकर कोई भी तड़प उठे। सारे समझौतों को दरकिनार करते हुए नई इजराईली ग़ैर-क़ानूनी बस्ती बनाने का काम भी निर्बाध रूप से जारी था। अल-क़स्साम ब्रिगेड का वर्तमान "अल-अक्सा तूफ़ान" वास्तव में हमास की दुनिया से बढ़ती मायूसी का परिणाम है।

ऐसे में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुतेरेस (Anto_nio Guterres) का बयान बड़ा साहसिक नज़र आता है। उन्होंने सात अक्तूबर की कार्रवाई को "75 years of suffocating occupation" कहा था, जिस पर इज़राइल इतना चिराग़पा है कि इज़राइल में उनके आगमन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। दुनिया वास्तव में इस पर आश्चर्य चकित है कि इज़राइल जैसी आर्थिक व सैन्य शक्ति जिसकी पुश्त पर अमेरिका और पश्चिमी महा शक्तियां हैं, से फ़िलिस्तीन के कमज़ोरों और निहत्थों ने कैसे युद्ध ठाना है।

फ़िलिस्तीनियों ने अपने संघर्ष से दुनिया के सामने शक्ति की प्रचलित और स्थापित अवधारणा से इतर शक्ति की एक दूसरी अवधारणा भी पेश की है, जिसे देखकर साम्राज्यवादी शक्तियां भयभीत हैं और अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी अभिभूत। शक्ति की इस अवधारणा में अंतरात्मा की शक्ति, ईश्वर पर अटल विश्वास और ज़ुल्म की कोख से उपजा जज़्बा-ए-इंक़लाब शक्ति के अधिक प्रभावी स्रोत होते हैं।

फ़िलिस्तीनी स्वतंत्रता और संघर्ष के प्रसिद्ध कवि महमूद दर्वेश ने आज से बरसों पहले इज़राइलियों को फ़िलिस्तीनी मज़लूमों के क्रोध और प्रतिशोध से डराया था। "आइडेंटिटी कार्ड" महमूद दर्वेश की असाधारण कविता है जो एक मज़लूम फ़िलिस्तीनी द्वारा अपने उत्पीड़कों के प्रति अवज्ञा और प्रतिशोध का भावुक संदेश साझा करती है। कविता का एक अंश देखें....

"मैं लोगों से नफ़रत नहीं करता
मैं किसी की संपत्ति पर अतिक्रमण नहीं करता
और फिर भी अगर मुझे भूख लग जाए
तो मैं अपने हड़पने वाले का मास खाऊंगा
सावधान, मेरी भूख से सावधान
और मेरी क्रोध से। "

इस एक वर्ष के संघर्ष ने पश्चिमी मुल्कों के ढोंग और आडंबर का भी पर्दा फ़ाश किया है। दुनिया में स्वतंत्रता, न्याय और मानवाधिकार के चैंपियन बने फिरने वाले,कैसे ज़ायॉनिस्टों के कुकृत्य का खुला साथ दे रहे हैं। अभी पिछले दिनों 2024 का अंतर्राष्ट्रीय नोबेल शान्ति पुरस्कार जापान के निहोन हिन्दांक्यो (Nihon Hindankyo) को 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु हमले की पृष्ठ भूमि में 'परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व' बनाने के प्रयासों के लिए दिया गया। ये कैसी दोहरी मानसिकता का परिचायक है कि एक तरफ़ पश्चिम परमाणु हथियारों से होने वाले विनाश को ख़त्म करने के प्रयासों पर शांति पुरस्कार बांट रहा है और दूसरी तरफ़ ज़ायोनिस्ट इज़राइल को फ़िलिस्तीनियों को मलबों में दफ़न करने के लिए पैसे और ख़तरनाक हथियार दे रहा है।

पश्चिमी महाशक्तियां जिस प्रकार खुले तौर पर इज़राइल की मदद कर रही हैं ये मानवधिकार की तबलवादक पश्चिमी आडंबर की खुली दलील है। क्या इस कथित आधुनिक, उदार, तार्किक और लोकतांत्रिक दुनिया में 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' का नियम ही सार्वभौमिक सत्य क़रार पायेगा?

पिछले दिनों फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमानुएल् मैक्रों (Em_manuel macron) ने इज़राइल को हथियार ना देने की बात कही थी, उन्होंने कहा था कि इज़राइल को युद्ध का हल अब डिप्लोमेटिक तरीक़े से निकालना चाहिए। मैक्रों के इस बयान के बाद इजराइली पीएम भड़क गए, बाद में अमेरिका के हस्तक्षेप के बाद मैक्रों ख़ामोश हो गए। पश्चिम को अब सभ्य कहलाने का हक़ नहीं रह गया है, यदि वे ग़ज़्ज़ा को मलबे में तब्दील करने के बाद भी पैसे, टेक्नोलॉजी और अत्याधुनिक हथियार की खेप की खेप इज़राइल को भेजने से बाज़ नहीं आ रहा तो इसका साफ़ अर्थ है कि पश्चिम विस्तारवादी ज़ायोनिस्ट इज़राइल के साथ डंके की चोट पर खड़ा है और दुनिया को शांति पुरस्कारों और शांति अपीलों से फ़्रेब दे रहा है। इस एक साल में फ़िलिस्तीनियों और ग़ज़्ज़ा के लोगों के साथ क्या-क्या नहीं हुआ, चालीस हज़ार से अधिक जानें गयीं, बीस लाख से अधिक लोग जान बचाने के लिए दर-दर भटक रहे हैं, शहरों और आबादियों को मलबे के ढेर में बदल दिया गया है। स्कूल, हॉस्पिटल आदि सब मिस्मार कर दिये गए हैं। एक साल, एक सदी की तरह बीत गया। किसी दिल और आंख रखने वाले इंसान के लिए शब्द नहीं हो सकते इसे बयान करने के लिए, हर संवेदनशील इंसान इसे देखकर एक ऐसे बोझ के साथ जीवन काट रहा है जिसमें असहाय बच्चों और माओं की उजड़ी गोद का साथ नहीं देने की असहनीय पीड़ा उसे लगातार परेशान कर रही है। ■■

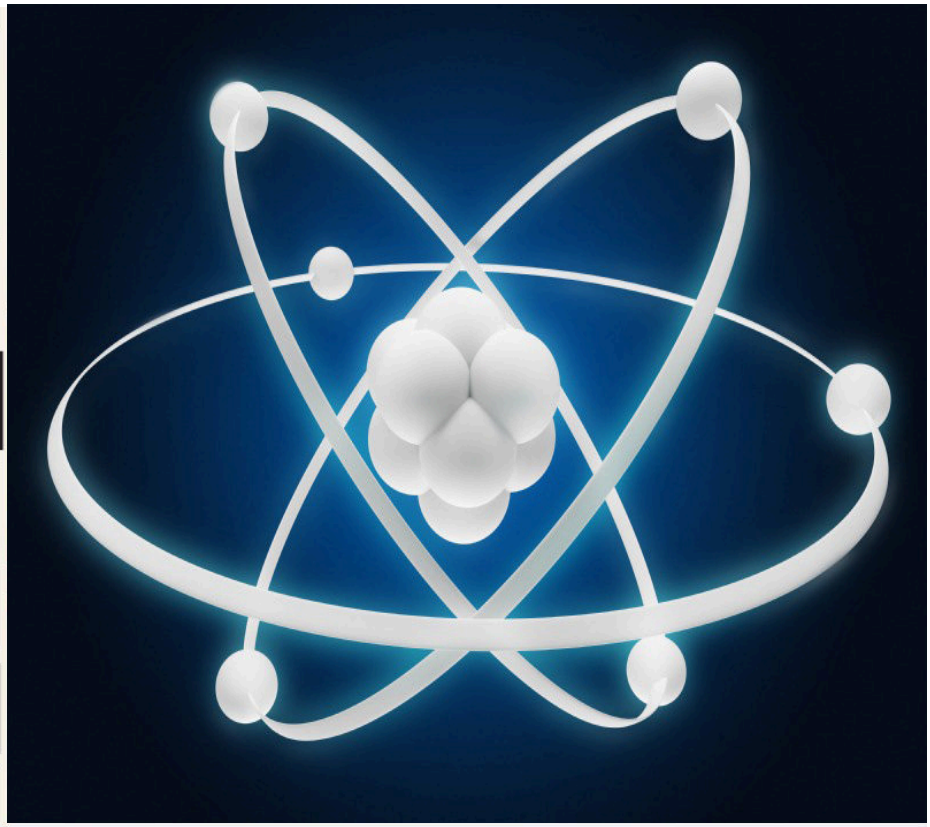


“अगर आदम की सन्तान के पास माल से भरी दो घाटियां भी हों तो उसे तीसरी की इच्छा और तलाश होगी। आदम की सन्तान के पेट को सिर्फ़ मिट्टी ही भरती है, और अल्लाह तौबा करने वाले की तौबा स्वीकार करता है।” (हदीस : बुख़ारी)

with best compliment from

IIH, Ramgargh [Jharkhand]





चिंतन



डॉ. मुहम्मद रिज़वान

क्या है आधुनिक नास्तिकता का वैचारिक आहार ?

विज्ञान को ही ज्ञान का एकमात्र साधन मानने वाले विज्ञानवादी दृष्टिकोण को आधुनिक नास्तिकता की जननी के रूप में देखा जाता है। हमारे निकट विज्ञानवाद का एक सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव आधुनिक नास्तिकता और इसके अनुयायियों तथा इसे बढ़ावा देने वालों के संदर्भ में यह हुआ कि इन नास्तिकों के लिए विज्ञानवाद एक अप्रत्याशित वरदान साबित हुआ। डार्विनवाद के संदर्भ में रिचर्ड डॉकिन्स का सुप्रसिद्ध कथन किसे याद नहीं होगा, जिसमें वे कहते हैं–

Darwin made it possible to be an intellectually fulfilled atheist.

"डार्विन ने बौद्धिक रूप से पूर्ण नास्तिक बनना संभव बनाया।"

कई शोधकर्ता, संशयवादी और अज्ञेयवादी (skeptics and agnostics) इस बात से सहमत हैं कि आधुनिक नास्तिकता आक्रामक (aggressive) है। और विज्ञान से आगे बढ़कर विज्ञानवाद के सहारे विकसित हुई है।

आधुनिक नास्तिक लोग अतीत के शीर्ष वैज्ञानिकों के ईश्वर के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण को नास्तिक दृष्टिकोण रुख के रूप में लेते हैं और इस प्रकार अपने लिए बौद्धिक संतुष्टि का आहार प्रदान करते हैं।

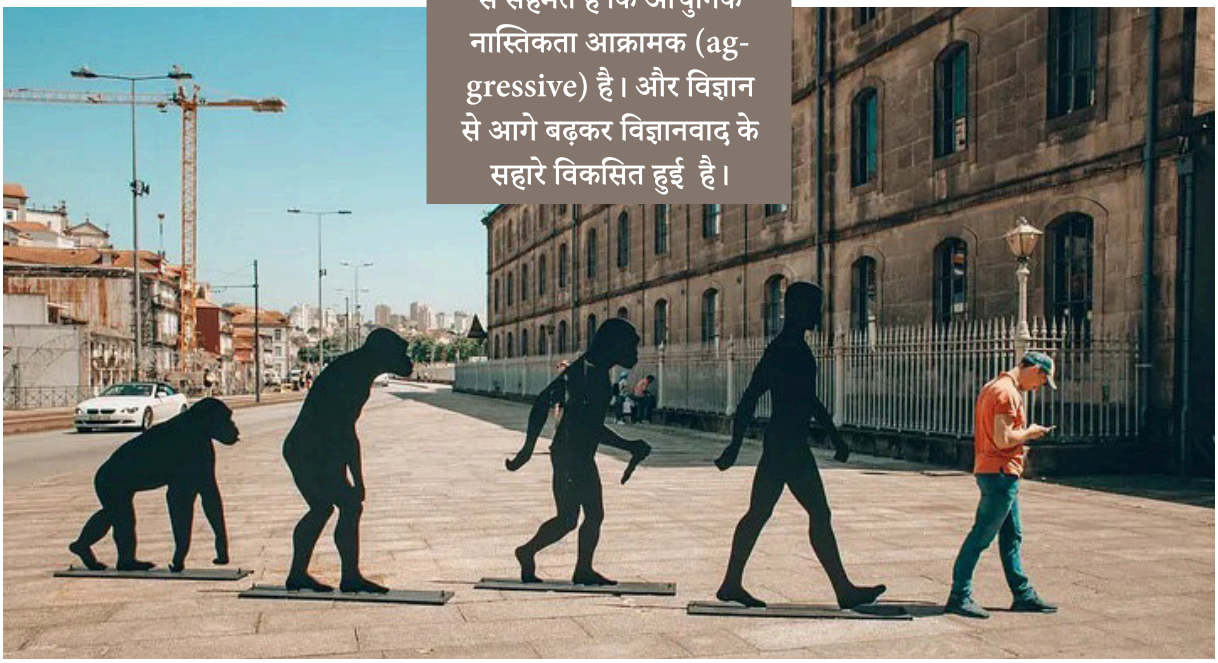
उदाहरण के लिए, चार्ल्स डार्विन के बारे में अधिकतर इस बात से सहमत हैं कि वह कभी भी नास्तिक नहीं थे। अधिकतर लोग उन्हें संशयवादी या अज्ञेयवादी (agnostics) की श्रेणी में रखते हैं, लेकिन अगर आप आधुनिक नास्तिकता को पूरा पढ़ेंगे, तो आप पाएंगे कि आधुनिक नास्तिकता डार्विन को एक नास्तिक के रूप में चित्रित करती है और उनके धार्मिक दृष्टिकोण की व्याख्या उनके समय की राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के आधार पर अपने हिसाब से करती है। जबकि डार्विन ने कभी भी औपचारिक रूप से यह संकेत नहीं दिया कि वह नास्तिक या ईश्वर का इन्कार करने वाले हैं।

स्पष्ट रहे कि विकास का सिद्धांत

(विस्तार के लिए देखें : विकासवाद का सिद्धांत और सृजन की अवधारणा, समकालीन बहसों की समीक्षा) सूक्ष्म-विकास (microevolution) के तो यथोचित प्रमाण प्रस्तुत करता है, लेकिन बहुत सारे सूक्ष्म विकास मिलकर दीर्घाकार विकास के अनुकूल होते हैं, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आना बाक़ी है।

हमारे निकट इसके अप्रत्यक्ष साक्ष्य अभी इस स्तर के नहीं हैं कि उन्हें इतने असाधारण वैज्ञानिक पक्ष को उचित ठहराने के लिए उपयोग किया जा सके। क्योंकि मानव अस्तित्व किसी स्रष्टा के

रिचर्ड डॉकिन्स का सुप्रसिद्ध कथन किसे याद नहीं होगा, जिसमें वे कहते हैं– Darwin made it possible to be an intellectually fulfilled atheist. "डार्विन ने बौद्धिक रूप से पूर्ण नास्तिक बनना संभव बनाया।" कई शोधकर्ता, संशयवादी और अज्ञेयवादी (skeptics and agnostics) इस बात से सहमत हैं कि आधुनिक नास्तिकता आक्रामक (aggressive) है। और विज्ञान से आगे बढ़कर विज्ञानवाद के सहारे विकसित हुई है।



अस्तित्व या अस्तित्वहीनता के बारे में कैसे निर्णय ले सकता है? यानी मनुष्य के अस्तित्व का विकास क्रमिक रूप से हुआ, इसके तमाम प्रमाणों के बावजूद भी यह प्रश्न बना रहेगा कि इस क्रमिकता के पीछे क्या प्रेरणा निहित थी? क्योंकि विकासवाद के सिद्धांत द्वारा बताई गई प्रेरणाएं प्रमाणों और तर्कों की दुनिया में अपर्याप्त हैं, लेकिन विज्ञानवाद के समर्थक, जो आधुनिक नास्तिकों की अग्रिम टोली में भी शामिल हैं, इस तर्क को प्रयाप्त समझते हैं कि मनुष्य का क्रमिक विकास उसे किसी स्रष्टा की आवश्यकता से बेपरवाह कर देता है।

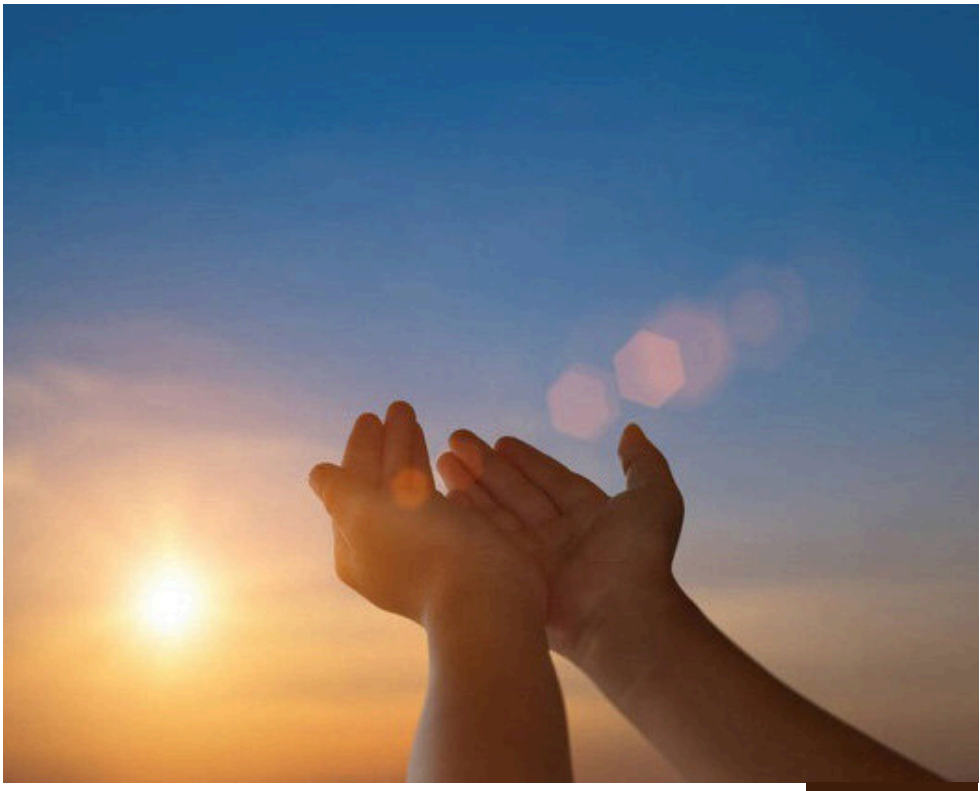
अल्बर्ट आइंस्टीन का मामला भी ऐसा ही है। अल्बर्ट आइंस्टीन को आधुनिक नास्तिक लोग नास्तिक मानते हैं। जबकि आइंस्टीन का धार्मिक दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट नहीं था। उनका प्रसिद्ध कथन है–"God does not play dice" यानी ईश्वर पासे नहीं खेलता। यह कथन और इसी तरह के दूसरे कथन जो अधिकतर आइंस्टीन ने अपने बयानों में कहे हैं, वह आइंस्टीन को ईश्वर में विश्वास करने वालों की पंक्ति में खड़ा कर देते हैं। जबकि अपने एक पत्र (जिसे ख़रीदने के लिए रिचर्ड डॉकिंस बहुत आतुर थे और जो वर्ष 1950 में एरिक गुटकाइंड (Eric Gutkind) के नाम से लिखा गया था) में आइंस्टीन ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उनके लिए ईश्वर शब्द मानवीय कमज़ोरी की अभिव्यक्ति और परिणाम है। हालांकि आइंस्टीन के पत्रों के विशेषज्ञ इससे असहमत हैं। उनका कहना है कि ईश्वर के प्रति आइंस्टीन के दृष्टिकोण उनके व्याख्यानों, पत्रों और उनके बड़े कैनवस पर देखा जाना चाहिए न कि किसी एक पत्र के केवल जुमले से। विस्तार या विवरण के लिए देखें[1]

संक्षेप में, आधुनिक नास्तिक

(1) https://www.nytimes.com/2018/12/02/nyregion/einstein-god-letter-auction.html

लोग अतीत के शीर्ष वैज्ञानिकों के ईश्वर के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण को नास्तिक दृष्टिकोण रुख़ के रूप में लेते हैं और इस प्रकार अपने लिए बौद्धिक संतुष्टि का आहार प्रदान करते हैं।

उपरोक्त असाधारण प्रभाव के अलावा और भी कई प्रभावों का उल्लेख किया जा सकता है, लेकिन उन पर सहमति नहीं है। उनमें से कुछ विज्ञानवाद के प्रति पारंपरिक पक्षपात रखते हैं। उदाहरण के लिए, प्रथम विश्व युद्ध के लिए जीवन की वैज्ञानिक अवधारणा को ज़िम्मेदार ठहराया जाता है। सीधे तौर पर यह बात अतिशयोक्तिपूण हो सकती है, लेकिन आज की कई समस्याओं के लिए कुछ विचारधाराएं ज़िम्मेदार हैं और इन सभी विचारधाराओं की जड़ विज्ञानवाद है। उदाहरण के लिए पूंजीवादी उपनिवेशवाद सामाजिक डार्विनवाद का परिणाम है। पारिवारिक पतन नारीवाद की पैदावार है। भौतिकवाद विज्ञानवाद का प्रत्यक्ष परिणाम है और बहुत सारी समस्याओं की जननी है।



पर्यावरणीय संकट की जड़ में प्रकृति और इस पर नियंत्रण करने तथा मनुष्य के संप्रभु हो जाने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण निहित है, जिसकी जड़ें उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिक साहित्य में आसानी से मिल जाती हैं। आदि-आदि। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि विज्ञान, धर्म और समाज के त्रिकोण में विज्ञानवाद ने अंततः पश्चिमी समाज की जिस प्रकार सिंचाई की है, उससे समाज की पारंपरिक अवधारणा और उसके संरचनात्मक अंगों दोनों पर असाधारण प्रभाव पड़े हैं। यह भी ध्यान में रखनी चाहिए कि विज्ञान विज्ञानवाद में कब बदल रहा है, इसके लिए बड़ी सावधानी की ज़रूरत है। और विज्ञान को विज्ञान तक सीमित करने के हर प्रयास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि विज्ञान वांछित है, विज्ञानवाद अवांछनीय (undesirable) और हानिकारक है। ज्ञान के एक साधन के रूप में विज्ञान और उससे पैदा होने वाली तकनीक बड़े कैनवास पर मनुष्य के लिए सही अर्थों में लाभकारी हो, यही वास्तविक लक्ष्य है। ■■

कान्ति साप्ताहिक और कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें !

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

"लोगों, हमने तुमको एक मर्द
और एक औरत से पैदा किया और फिर
तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियां बना दीं ताकि
तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में ईश्वर की
दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो
तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार (संयमी) है।
निश्चय ही ईश्वर सब कुछ जानने वाला
और ख़बर रखने वाला है।"
(क़ुरआन, 49:13)

with best compliment from

J.I.H. Unit Rankai (MP)



धर्म– "आशा" और "उद्देश्य" की नींव

सौंदर्य बोध



संपादन प्रभाग

धर्म, चाहे किसी भी रूप में हो, कुछ अपवादों को छोड़कर, मनुष्य को आशा और उद्देश्य देता है, जबकि नास्तिकत दृष्टिकोण मनुष्य से यह आशा और उद्देश्य छीन लेता है। यह उसका घोषित उद्देश्य नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी समस्या है जिसका सीधा संबंध इस दर्शन की आंतरिक गहराइयों से है। इस समस्या के समाधान के लिए वह धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद का सहारा लेता है।

आशा और उद्देश्य हर समझदार इन्सान की बुनियादी ज़रूरतें हैं। हमारे लिए आशा और उद्देश्य बिल्कुल उसी तरह बुनियादी ज़रूरतें हैं, जैसे रोटी, कपड़ा और मकान। एक भौतिक अस्तित्व के लिए और दूसरा आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए (स्पष्ट रहे कि यहां पदार्थ और आत्मा का विभाजन प्रचलित अर्थों में है) आशा और उद्देश्य के बिना मानव चेतना और समाज दोनों ही दिशाहीन हो जाते हैं और इस भटकाव का परिणाम वर्तमान युग में सर्वत्र दिखाई दे रहा है।

धर्म, चाहे किसी भी रूप में हो, कुछ अपवादों को छोड़कर, मनुष्य को आशा और उद्देश्य देता है, जबकि आधुनिक नास्तिकता की जननी और विज्ञान को ही ज्ञान का एकमात्र साधन मानने वाले विज्ञानवादी दृष्टिकोण मनुष्य से यह आशा और उद्देश्य छीन लेता है। यह उसका घोषित उद्देश्य नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी समस्या है जिसका सीधा संबंध इस दर्शन की आंतरिक गहराइयों से है। इस समस्या के समाधान के लिए वह धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद का सहारा लेता है। विज्ञानवाद कैसे आशा और उद्देश्य को छीनता है, देखिए।

विज्ञान कहता है कि यह एक प्रमुख वैज्ञानिक बहस है कि मनुष्य धीरे-धीरे आदिम जीवों से मानव रूप में विकसित हुआ। जबकि विज्ञानवाद का कहना है कि निश्चित रूप से इन्सान धीरे-धीरे ही अस्तित्व में आया है। इसके अस्तित्व में आने का कोई दूसरा रूप, कोई दूसरा औचित्य और कोई दूसरा तरीक़ा है ही नहीं, क्योंकि भौतिक विज्ञान और उसके शोध यही कहते हैं और चूंकि ज्ञान का एकमात्र साधन भौतिक विज्ञान ही है, इसलिए यही सही है। अब, यदि मनुष्य प्रकृति से अस्तित्व में आया है, तो इसका अनिवार्य अर्थ यह है कि इस सृष्टि के लिए किसी स्रष्टा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि भौतिक विज्ञान के अनुसार, संयोग के आधार पर और फिर अस्तित्व संघर्ष के सिद्धांत के तहत जगत और मनुष्य अस्तित्व में आ सकता है और वह एक सामाजिक ही प्राणी है। अब यदि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी ही ठहरा तो किसी भी उच्च मानवीय मूल्य की सुरक्षा या उसे अपने भीतर विकसित करना एक अतिरिक्त आवश्यकता तो हो सकती है, उद्देश्य नहीं। किसी अलौकिक सत्ता

आशा और उद्देश्य हर समझदार इन्सान की बुनियादी ज़रूरतें हैं। आशा और उद्देश्य के बिना मानव चेतना और समाज दोनों ही दिशाहीन हो जाते हैं और इस भटकाव का परिणाम वर्तमान युग में सर्वत्र दिखाई दे रहा है। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि कुछ धर्म पाप और पुण्य की ऐसी अवधारणा भी देते हैं जो कुछ लोगों को निराशा की ओर ले जाती है, लेकिन सामान्य तौर पर धर्म मनुष्य को आशा और उद्देश्य देते हैं। सच्चे धर्म अपने वास्तविक रूप में मनुष्य को आशा और उद्देश्य की ओर ले जाते हैं।

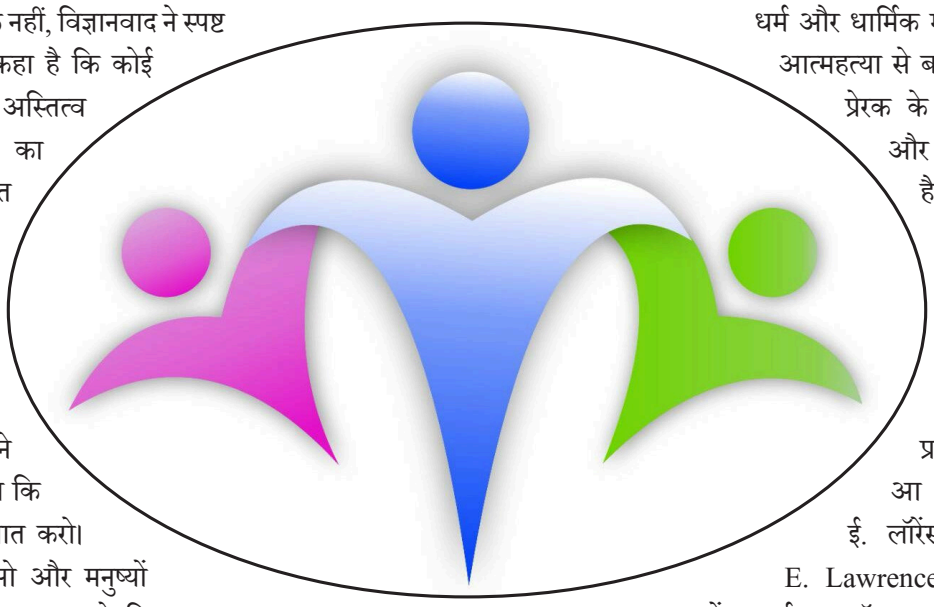


का जब सृष्टि को बनाने में कोई हस्तक्षेप नहीं है तो फिर परलोक, गणना और व्यवहार की जवाबदेही तब तक ठीक है जब तक कि ये सभी गुण "Trait" अपने लाभ के लिए हों। लाभ ख़त्म गुण भी ख़त्म । इसलिए जब स्टीफन हॉकिंग कहते हैं कि ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने के लिए किसी अलौकिक सत्ता की आवश्यकता नहीं है, तो वह सिर्फ़ एक बयान नहीं दे रहे हैं, वह उन लाखों लोगों से आशा और उद्देश्य को छीन रहे हैं जो उन्हें अपना मार्गदर्शक मानते हैं। जब ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं, तो कोई पुरस्कार और दंड भी नहीं, कोई परलोक नहीं, कोई हिसाब-किताब भी नहीं और कुछ भी नहीं। यह आशा कि परलोक होगा, जो आज उत्पीड़ित हैं उन लोगों को न्याय मिलेगा, आज यदि कोई व्यक्तिगत स्तर पर विफल है, तो कल परलोक में सफल होगा। आज यदि कोई राष्ट्र अत्याचार की चक्की में इसलिए पिस रहा है कि वह साधन, कौशल, सामूहिक संघर्ष और "अस्तित्व संघर्ष" के क्षेत्र में पिछड़ गया है, तो आशा है कि परलोक में उसे अत्याचार के बदले न्याय अवश्य मिलेगा, और अत्याचारी का अंतिम परिणाम देखने का अधिकार भी उसे मिलेगा। विज्ञान से आगे बढ़कर विज्ञानवाद इस आशा को छीन लेता है।

आशाएं व्यक्तिगत भी होती हैं और मानव जाति के रूप में भी। उद्देश्य व्यक्तिगत भी होते हैं और सामूहिक भी। व्यक्तिगत उद्देश्यों में सफलता, उन्नति, परलोक में स्वर्ग एवं नरक की प्राप्ति आदि शामिल हैं। सामूहिक उद्देश्यों में राष्ट्र और राज्य का कल्याण, मानव जाति का समग्र विकास आदि शामिल हैं। विज्ञानवाद के माध्यम से यह बताया जाता है कि कोई स्रष्टा या ईश्वर नहीं है। जब कोई स्रष्टा नहीं है, तो फिर सुधार, अच्छाई, स्वतंत्रता और इच्छा, नैतिकता, त्याग एवं बलिदान। यह सब पूर्ण (Absolute) न होकर सापेक्षिक (relative) हो जाता है। फिर मानवता सापेक्ष सुधार और सापेक्ष अच्छाई और सापेक्ष स्वतंत्रता व इच्छा की जीवन अवधारणा की ओर मुड़ती है। यानी यह सब इसलिए ज़रूरी है कि हम मानव जाति के रूप में प्रगति करें। यदि इनके बिना भी कर सकते हैं, तो यह सब ज़रूरी नहीं, लेकिन यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मानव जाति के रूप में प्रगति के यह सुखद नारे केवल धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद के आधार पर वास्तविकता में नहीं बदले जा सकते, इसके लिए कुछ और ठोस आधार चाहिए। आलोचकों का कहना है कि धर्म के आधार पर, उस धर्म के आधार पर जिसे आप आशा और उद्देश्य देने वाला बताते हैं, उसने तो और भी तबाही मचाई है। वह भी आशा

और उद्देश्य प्रदान करने में पूरी तरह से सफल नहीं हैं, बल्कि इससे आगे बढ़कर धार्मिक सर्वोच्चता एक जुनून का रूप ले चुकी है। हमारा मानना यह है कि धर्म समस्या नहीं है, बल्कि धर्मों को बुनियाद बनाकर मानवीय व्याख्याओं (interpretation) ने तबाही मचाई है। वे कहते हैं कि यही बात विज्ञान और विज्ञानवाद पर भी लागू की जा सकती है कि इसकी व्याख्या ग़लत की गई है। हम कहते हैं कि नहीं, विज्ञानवाद ने स्पष्ट और दो-टूक कहा है कि कोई ईश्वर नहीं है, अस्तित्व संघर्ष समाज का आधारभूत मूल्य है। सभी ईश्वरीय मूल्य और नैतिकता सापेक्ष हैं। जबकि धर्मों ने कभी नहीं कहा कि हत्या एवं उत्पात करो। बिगाड़ फैलाओ और मनुष्यों को मनुष्यों का दास बनाओ। विज्ञानवाद ने स्पष्ट रूप में कहा है कि मनुष्य केवल एक भौतिक अस्तित्व है और आत्मा तथा नैतिकता सापेक्षिक संभावनाएं हैं। आध्यात्मिक अस्तित्व की जो बात की जाती है वह केवल रासायनिक संचरण एवं जटिल रासायनिक संजाल (net-works) और तंत्रिका कोशिकाओं में परिवर्तनों से संबंधित है। इसलिए पुरस्कार दंड और परलोक जैसी कोई चीज़ नहीं है। धर्म ने यह नहीं कहा कि आत्मा एक अलौकिक चीज़ है। वह एक वास्तविकता है और मृत्यु के बाद का जीवन भी एक वास्तविकता है। धर्मों ने कहा कि सभी मनुष्य भाई-भाई हैं। ईश्वर द्वारा पैदा किए गए हैं और उनका एक दूसरे पर अधिकार है। जबकि विज्ञानवाद ने इसके विपरीत जीवन की अवधारणा देकर मनुष्य से आशा और उच्च उद्देश्य दोनों से समाज को वंचित कर दिया।

धर्म किस तरह आशा और उद्देश्य देता है, और अंततः यही आशा और उद्देश्य मनुष्य को बेहतरी की ओर ले जा



सकते हैं, इसका बस एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

सुसाइडोलॉजी (Suicidology) अब विज्ञान की एक शाखा के रूप में विकसित हो रही है। (इसका अस्तित्व इस वास्तविकता से संबंधित है कि जब तक आप इस पुस्तक के कुछ पन्ने पूरे करेंगे, तब तक हमारे प्यारे देश में ही कोई व्यक्ति अपने हाथों अपना बहुमूल्य जीवन ले चुका होगा, और दुनिया भर में कई लोग आत्महत्या कर चुके होंगे। कोई व्यक्ति आत्महत्या क्यों करता है? इस पर कई लेख और पुस्तकें मौजूद हैं और अब इसके विशेषज्ञ इस नतीजे पर पहुंच चुके हैं कि आत्महत्या और "आशा" का परस्पर सीधा संबंध है। लगभग सभी विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि आत्महत्या की भावना निराशा के चरम बिंदु पर पहुंच कर ही प्रकट होती है। जब व्यक्ति हर तरफ़ से निराश हो जाता है तो उसे मौत ही मुक्ति देने वाली मालूम होने लगती है। यहीं से धर्म की भूमिका शुरू होती है।

धर्म और धार्मिक मान्यताओं को आत्महत्या से बचाव के मुख्य प्रेरक के रूप में देखा और माना जाता है, लेकिन इस संदर्भ में विभिन्न शोध पत्र अलग-अलग परिणाम प्रस्तुत करते आ रहे थे। रयान ई. लॉरेंस ने (Ryan E. Lawrence) वर्ष 2016 में आर्काइव्स ऑफ़ सुसाइड रिसर्च में एक ज़बरदस्त लेख लिखा था। इस लेख में उन्होंने 89 शोध पत्रों का विश्लेषण किया जो धर्म, आत्महत्या और उससे संबंधित पहलुओं पर चर्चा करते हैं।[1] उन्होंने अपने निष्कर्षों में लिखा कि धर्म और धार्मिक मान्यताएं यद्यपि बहुत जटिल हैं, लेकिन शोध बताते हैं कि धर्म आत्महत्या के प्रयासों को रोकने में सहायक है। दूसरे शब्दों में, धार्मिक लोग जो किसी हद तक अपने आपको धर्म से जोड़ते हैं, उन लोगों की तुलना में जो ग़ैर-धार्मिक, नास्तिक या इस जैसे किसी पहलु से अपने आपको जोड़ते हैं,

(1) Ryan E. Lawrence, Maria A. Oquendo & Barbara Stanley (2016), Religion and Suicide Risic A Systematic Review Archives of Suicide Research Volume 20.1 pp 1-21, 2016.

आत्महत्या की बहुत कम कोशिश करते हैं। इसलिए साबित हुआ कि धर्म उम्मीद देता है और उम्मीद न केवल व्यक्ति के जीवन की अवधारणा को प्रभावित करती है। बल्कि इसका प्रभाव उसके कार्यों और व्यवहारों पर भी पड़ता है।

उद्देश्य के संदर्भ में भी यह बात उतनी ही सत्य है। यदि मनुष्य अन्य जीवों की तरह ही है या उनका एक विकसित रूप है, तो यह ढांचा अंततः मनुष्य को किसी उच्च उद्देश्य के लिए कैसे प्रेरित कर सकता है? या अगर कर भी सकता है तो उसका आधार क्या हो सकता है? केवल मानव जाति की भलाई और सफलता, लेकिन फिर सवाल प्रेरणाओं का खड़ा हो जाता है। स्वर्ग, नर्क, पुरस्कार और दंड, ये सब मानव मनोविज्ञान के लिए सिद्ध प्रेरणाएं हैं, (कुछ कमी-बेशी के साथ)।

अतः मनुष्य की विशिष्टता को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। यह विशेष दर्जा उसे ऊंचे उद्देश्यों के लिए प्रेरित करता है। उच्च उद्देश्यों के लिए उसमें बलिदान की भावना पैदा करता है। यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि विज्ञानवाद के समर्थकों के लिए प्रजातिवाद (Speciesism) बहुत सारी समस्याओं की जड़ है। प्रजातिवाद का अर्थ है कि मनुष्य भी अन्य जीवों की तरह एक जीव है। उसे कोई विशेष सम्मान नहीं दिया गया है। धरती के संसाधनों पर उसका उतना ही अधिकार है जितना शेर, चीते, बंदर या चींटी का हो सकता है। इसलिए, जब मनुष्य स्वयं को ईश्वर की विशेष रचना मानता है और प्रकृति को अपने सेवक के रूप में देखता है, तो प्रकृति के संसाधनों का क्रूरतापूर्वक उपयोग करता है और इसी कारण पूरी दुनिया में पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो गया है।

पहली नज़र में बहुत मज़बूत नज़र आने वाला यह तर्क वास्तव में बहुत कमज़ोर है। हमारे निकट प्रजातिवाद (Speciesism) के दो पहलू हैं, एक तो यह कि मनुष्य प्रकृति को अपना ग़ुलाम न समझे, बल्कि धरोहर समझे और इसमें प्रकृति की नैतिक सीमाएं तय करे। दूसरा यह कि प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने से बचे। अपने आपको अन्य प्राणियों के स्तर से नीचे न गिराए, लेकिन प्रकृति में उनके महत्व से इन्कार भी न करे। प्रजातिवाद की ऐसी सकारात्मक अवधारणा एकदम तार्किक है।

आधुनिक विज्ञानवाद ने प्रजातिवाद की एक नकारात्मक अवधारणा दी है, जिसके अनुसार, मनुष्य भी अन्य प्राणियों या जानवरों की तरह ही है, उसका कोई सार्वभौमिक या विशेष दर्जा नहीं है। जबकि आकाशीय पुस्तकें मनुष्य को पृथ्वी पर विशेष अधिकार और सम्मान का पात्र घोषित करती हैं। (बाइबल, तौरात, ज़बूर और क़ुरआन में इसके प्रमाण हैं) इस नकारात्मक प्रजातिवाद ने मनुष्य और अन्य जीवों को एक ही पंक्ति में खड़ा कर दिया। किसी विशेष हैसियत की अनुपस्थिति की अवधारणा मनुष्य से आशा और उद्देश्य छीन लेती है।

इसलिए कई मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, पूरी मानव जाति में, विशेषकर तथाकथित विकसित देशों में उद्देश्यहीनता (pur posel essness) और निराशा (hopel essness) बढ़ी है।[1]

यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि कुछ धर्म पाप और पुण्य की ऐसी अवधारणा भी देते हैं जो कुछ लोगों को निराशा की ओर ले जाती है, लेकिन सामान्य तौर पर धर्म मनुष्य को आशा और उद्देश्य देते हैं। सच्चे धर्म अपने वास्तविक रूप में मनुष्य को आशा और उद्देश्य की ओर ले जाते हैं। ■■

(1) https://www.census.gov/data/tables/2020/demo/hhp/hhp4.html,and https://www.washingtonpost.com/opinions/americans-face-a-rising-tide-of-despair-we-have-a-duty-to-act/2019/09/05/8d98c0c2-d01d-11e9-8c1c-7c8ee785b855story.html

मध्य-पूर्व की मानव त्रासदी और आधुनिक दुनिया का आडंबर



मध्य पूर्व में एक वर्ष से भी अधिक समय से युद्ध चल रहा है। इस्राईली आक्रामकता निर्ममता की सारी हदें पार कर रही है। ईरान और लेबनान बारूद के ढेर पर खड़े हैं। रक्तपात बढ़ने के बावजूद आधुनिक युग के प्रमुख शक्तिशाली देश मूकदर्शक बने हुए हैं। चीन ईरानी तेल का एक बड़ा आयातक है, लेकिन वह यहां दिलचस्पी नहीं ले रहा। रूस का रवैया भी चीन जैसा है। अपने हितों से इतर अन्याय के ख़िलाफ़ कोई खुलकर कर बोलने को तैयार नहीं। अमेरिका सहित कई यूरोपीय देश इस्राईल को हथियार भी दे रहे हैं और शांति की अपील भी कर रहे हैं। ऐसे में बाक़ी दुनिया से किसी ठोस क़दम अपेक्षा बेमानी है।

फ़िलिस्तीनियों का संघर्ष अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए है। इसके उलट इस्राईल द्वारा एक राष्ट्र का नरसंहार किया जा रहा है। 40 हज़ार से अधिक फ़लस्तीनी मारे जा चुके हैं। अभी परिस्थिति ऐसी है कि कोई भी ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि हालात किधर का रुख लेंगे? भारत की चिंता इस बात से भी जुड़ी हुई है कि इस्राईल और ईरान के बीच टकराव की नई तस्वीर में

मुख्य स्तम्भ



सुफ़ियान अहमद

कहीं दुनिया के और कई देशों के उलझने की स्थिति न बने। मध्य-पूर्व में अब युद्ध का दायरा जिस तरह फैलने की आशंका पैदा हो रही है, उसका सिरा कहां तक जा सकता है और इसके क्या नतीजे हो सकते हैं, इसका अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं है। अगर टकराव नहीं रुका तो कहीं ऐसा न हो कि युद्ध समूचे क्षेत्र को अपनी चपेट में ले ले।

वहां अब एक बार फिर से हालात चिंताजनक बन गए हैं। स्वाभाविक ही उन इलाक़ों में रहने वाली आम आबादी के सामने जीवन तक की चुनौती खड़ी हो रही है। बेगुनाह लोग मौत के घाट उतारे जा रहे हैं।

मध्य-पूर्व पिछले एक वर्ष से गंभीर रूप से हिंसा से अभिशप्त है। इस समय निशाने पर ईरान है। दुनिया का कोई भी देश इस्राईली बर्बता और अन्याया के ख़िलाफ़ खुलकर नहीं बोल सका। आज यदि कोई देश खुलकर इस्राईल के सामने खड़ा है तो वह है ईरान। अमेरिका का इस्राईल के प्रति झुकाव बहुत पुराना है जबकि ईरान मध्य-पूर्व में इस्राईल के अस्तित्व को नकारता रहा है। सामरिक दृष्टि से वह इस्राईल का सबसे बड़ा शत्रु माना जाता है।

विश्व की सबसे बड़ी सामरिक शक्ति होने के कारण अमेरिका सदा रणनीतिक पहल करने की स्थिति में रहता है। अपने राजनीतिक एवं आर्थिक लक्ष्यों को वह इस तरह प्रस्तुत करता है कि विश्व के हित और सुरक्षा की दिशा में वे ही एकमात्र विकल्प दिखाई देते हैं। अमेरिकी आक्रामकता के कारण सारी बहस उसके सुझाए विकल्प पर सीमित हो जाती है तथा इसके पीछे अमेरिका के दूरगामी रणनीतिक लक्ष्य क्या हैं इस पर बहस नहीं होती।

सच तो यह है कि "मध्य-पूर्व" में अमेरिकी नीति का यह खेल इस क्षेत्र में अस्थिरता का एक बड़ा कारण है। इस्राईल और ईरान के बीच चल रहा वर्तमान विवाद स्थिति को और जटिल बना रहा है और आधुनिक दुनिया इस

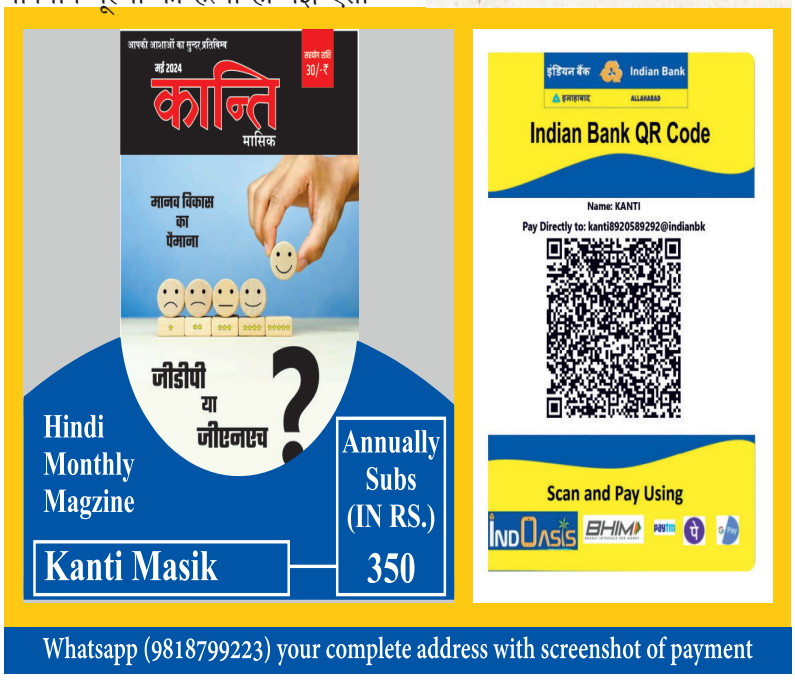
पूरे खेल को समझते हुए भी मूकदर्शक बनी हुई है। हिंसा और अस्थिरता के इस ख़तरनाक़ खेल पर चुप्पी आधुनिक तथा सभ्य कही जाने वाली इस दुनिया के पाखंड का परिचायक है।

पिछले एक वर्ष से दुनिया मध्य-पूर्व में इस्राईली मनमानी तथा मानवाधिकार के तमाम मूल्यों और नियमों को स्वाहा होते हुए देख रही है। ग़ज़ा के असहाय नागरिकों पर अपनी अंधाधुंध बमबारी को इस्राईल सही ठहराता रहा और तथाकथित सभ्य दुनिया देखती रही। ये वही लोग हैं, जो दुनिया को मानवाधिकार का पाठ पढ़ाने का दावा करते हैं। एक खुले क़ैदखाने में भोजन, दवा, पानी, और बिजली से वंचित 23 लाख फ़िलिस्तीनी जनता पर इस्राईली बर्बरता को इतिहास में काले अक्षरों से लिखा जाएगा।

स्कूल और अस्पताल दो ऐसी जगहें हैं, जिन्हें दुनिया भर में सबसे सुरक्षित माना जाता है, लेकिन ग़ज़ा पट्टी में जब पनाह लिए, इलाज करवा रहे फ़िलिस्तिनियों पर राकेट गिराए गए तो लगा कि बीसवीं सदी के समस्त मानवीय मूल्यों की हत्या हो गई। ऐसा



इस्राईली आक्रामकता निर्ममता की सारी हदें पार कर रही है। ईरान और लेबनान बारूद के ढेर पर खड़े हैं। रक्तपात बढ़ने के बावजूद आधुनिक युग के प्रमुख शक्तिशाली देश मूकदर्शक बने हुए हैं। चीन ईरानी तेल का एक बड़ा आयातक है, लेकिन वह यहां दिलचस्पी नहीं ले रहा। रूस का रवैया भी चीन जैसा है। अपने हितों से इतर अन्याय के ख़िलाफ़ कोई खुलकर कर बोलने को तैयार नहीं। अमेरिका सहित कई यूरोपीय देश इस्राईल को हथियार भी दे रहे हैं और शांति की अपील भी कर रहे हैं। ऐसे में बाक़ी दुनिया से किसी ठोस क़दम अपेक्षा बेमानी है।



Whatsapp (9818799223) your complete address with screenshot of payment



लगा जैसे यह दुनिया उलटी दिशा में बदल रही है। दुनिया की हर सभ्यता ने युद्ध को नैतिकतावादी दृष्टि से शुद्ध रखने के लिए कुछ नियम बनाए। युद्ध में भी मर्यादा की रेखा खींची गई कि अस्पतालों और स्कूलों पर हमले नहीं होंगे होंगे। जहां मरीज़ और बच्चे हों वहां बम नहीं बरसाए जाएंगे। इस्राईली बमों से न केवल ग़ज़ा के अस्पताल बल्कि इसमें अंतरराष्ट्रीय नियम और क़ानून भी भस्म हो गए।

पूरी ग़ज़ा पट्टी को एक खुला ताबूत बना दिया गया है। एक इंच ज़मीन ऐसी नहीं छोड़ी गई जिसे सुरक्षित कहा जा सके। समस्त मानवीय मूल्यों पर ही राकेट बरसा दिए गए। उन्मादी युद्ध की गर्जनाओं के बीच वहां के नागरिक असहाय दिखे। वहां के हर नागरिक के सिर पर मौत का नंगा नाच होता रहा है, क्योंकि वे एक ख़ास भूगोल में रह रहे हैं, जिसके इतिहास को वर्तमान राजनीति अपने हिसाब से इस्तेमाल करना चाहती है।

बीते एक वर्ष में इस्राईली निरंकुशता के साथ-साथ बाक़ी दुनिया का जो अंधापन देखने को मिला, इतिहास सदैव उसका साक्षी रहेगा। पश्चिमी नेता एकजुटता दिखाने के लिए इस्राईल जाते रहे, लेकिन वे ग़ज़ा में फ़िलिस्तीनियों के प्रति अपनी करुणा और दयालुता क्यों नहीं दिखा सके? क्या वे इंसान नहीं हैं? उनके दुख और कष्ट कोई मायने नहीं रखते?

“फ़िलिस्तीनियों पर इस्राईली बर्बरता के एक वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस विध्वंस के बीच 23 लाख फिलिस्तीनी जनता ने जिस साहस और जिजीविषा का परिचय दिया है। वह मनुष्यता के इतिहास की अमर गौरव गाथा है। इतिहास में जहां इस्राईल द्वारा उन पर ढाए गए ज़ुल्म और बर्बरता को घृणा के साथ देखा जाना चाहिए वहीं फ़िलिस्तीन के लुटे पिटे मारे गए नागरिकों की जिजीविषा को सम्मान के साथ याद रखा जाना चाहिए।”

पश्चिम एशिया में उभरे मौजूदा संकट के बीच जब संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने एक समझदारी भरा बयान दिया तो उन्हें इस्राईल द्वारा अपमानित किया गया। अपने बयान में उन्होंने कहा था कि “7 अक्तूबर को हमास का हमला शून्य में नहीं हुआ। वस्तुतः यह 75 वर्षों से इस्राईल-अमेरिकी प्रभुत्व की रणनीति का स्वाभाविक परिणाम है, जिसे बचाए रखने के लिए अमेरिका ब्रिटेन, जर्मनी तथा फ्रांस के राष्ट्राध्यक्ष इस्राईल की तरफ़ दौड़ पड़े और वे इस्राईली युद्ध अपराध के पक्ष में खड़े हैं।”

ज्ञात रहे कि गुटेरेस के इस बयान के बाद इस्राईल ने उनसे तुरंत इस्तीफ़ा देने की मांग कर डाली। यही नहीं इस्राईल ने संयुक्त राष्ट्र को सबक सिखाने के लिए उसके पदाधिकारियों तथा संयुक्त राष्ट्र मानवीय संयोजक (यूएन ह्यूमनेटेरियन को-ऑर्डिनेटर) मार्टिन ग्रिफिथ्स तक के यात्रा वीज़ा रद्द करने और किसी पदाधिकारी को इस्राईल में नहीं आने देने की धमकी दे डाली।

इस्राईल अपने जन्म के साथ ही

फ़िलिस्तीनियों का संघर्ष अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए है। इसके उलट इस्राईल द्वारा एक राष्ट्र का नरसंहार किया जा रहा है। फ़िलिस्तीन की स्वाभिमानी जनता अपनी मातृभूमि को आज़ाद कराने के लिए वर्षों से अपने प्राणों का बलिदान देती आ रही है। इस्राईल और ईरान के बीच चल रहा वर्तमान विवाद स्थिति को और जटिल बना रहा है और आधुनिक दुनिया इस पूरे खेल को समझते हुए भी मूकदर्शक बनी हुई है। हिंसा और अस्थिरता के इस ख़तरनाक़ खेल पर चुप्पी आधुनिक तथा सभ्य कही जाने वाली इस दुनिया के पाखंड का परिचायक है।



विस्तारवादी नीति पर चल रहा है। उसने फ़िलिस्तीन की भूमि पर अमेरिका और ब्रिटेन के समर्थन से क़ब्ज़ा कर रखा है और उनके समर्थन से अब इस ज़मीन से फ़िलिस्तीनी नागरिकों के अस्तित्व को समाप्त करना चाहता है। इसलिए इस्राईली अत्याचार के विरुद्ध फ़िलिस्तीनियों का पलटवार एक स्वभाविक प्रतिक्रिया के रूप में सामने आता है। विवाद की असल जड़ इस्राईल की ख़तरनाक विस्तारवादी सोच है। वह फ़िलिस्तीन की जनता को वहां से निर्वासित करके पूरी फ़िलिस्तीनी धरती पर क़ब्ज़ा जमा लेना चाहता है।

यदि अंतरराष्ट्रीय समुदाय इस्राईल के अत्याचार को रोक पाने में न्यायिक इच्छाशक्ति का परिचय देता तो शायद फ़िलिस्तीनी पलटवार के ऐसे क़दम न उठाते जो उन्हें मजबूरी में पिछले साल 7 अक्तूबर को उठाने पड़े। फ़िलिस्तीन समस्या विगत 75 वर्षों से चल रही है। यदि कभी संयुक्त राष्ट्र ने कोई प्रस्ताव पारित भी किया तो इस्राईल ने उसे स्वीकार करने से साफ़ इन्कार कर दिया और पूरी दुनिया असहाय बनी रही।

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि विश्व की कुछ बड़ी शक्तियां अपने-अपने हितों को देखते हुए पश्चिम एशिया में ख़तरनाक खेल खेलती आई हैं, जिसके कारण फ़िलिस्तीन की जनता निरंतर इस्राईल के अवैध क़ब्ज़े और क्रूरता का शिकार होती आई है। शांति के हर प्रयास को इस्राईल विफल करता रहा है और 75 वर्षों से न केवल अपना विस्तार कर रहा बल्कि फ़िलिस्तीनियों पर ज़ुल्म के पहाड़ भी तोड़ रहा है। 75 वर्षों से लाखों फ़िलिस्तीनी अपनी ही ज़मीन में बने शरणार्थी शिविरों में रहने को मजबूर हैं। यानी देशवासियों पर अपनी ही मातृभूमि में ज़मीनें सिमट चुकी हैं।

फ़िलिस्तीन की स्वाभिमानी जनता अपनी मातृभूमि को आज़ाद कराने के लिए वर्षों से अपने प्राणों का बलिदान देती आ रही है। जहां तक भारत का संबंध है, उसने हमेशा शांति की स्थापना और फ़िलिस्तीनी नागरिकों के अधिकारों की बात की है। राष्ट्रपिता गांधीजी और पंडित नेहरू, से लेकर अटल बिहारी बाजपेयी तक सभी ने हमेशा फ़िलिस्तीनी हितों का समर्थन किया है, लेकिन समय की विडम्बना देखिए कि आज भारत में भी स्थितियां बदल गई हैं।

फ़िलिस्तीनियों पर इस्राईली बर्बरता के एक वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस विध्वंस के बीच 23 लाख फिलिस्तीनी जनता ने जिस साहस और जिजीविषा का परिचय दिया है। वह मनुष्यता के इतिहास की अमर गौरव गाथा है। इतिहास में जहां इस्राईल द्वारा उन पर ढाए गए ज़ुल्म और बर्बरता को घृणा के साथ देखा जाना चाहिए वहीं फ़िलिस्तीन के लुटे पिटे मारे गए नागरिकों की जिजीविषा को सम्मान के साथ याद रखा जाना चाहिए। ■■



फ़िलिस्तीनियों के अस्तित्व की रक्षा और संयुक्त राष्ट्र की बेचारगी

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भविष्य शिखर सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में कहा, 'दुनिया एक बवंडर में फंसी है। हम ऐसी अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जो वैश्विक समाधान चाहती हैं।' इससे पहले उन्होंने कहा था, 'सुरक्षा परिषद जैसी संस्थाएं आज पूरी तरह अप्रासंगिक, अयोग्य और अक्षम हो चुकी हैं। इनमें सुधार किए बिना वैश्विक चुनौतियों से नहीं निपटा जा सकता।' अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा, 'हताश होने के बजाय हमें एकजुट होकर चुनौतियों का सामना करना चाहिए। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र को और सक्षम, प्रभावी और समावेशी बनाने की ज़रूरत है। इसीलिए हम सुरक्षा परिषद का सुधार और विस्तार करने का समर्थन करते हैं।' वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने वैश्विक संस्थाओं में सुधार के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा था, 'सुधार प्रासंगिक बने रहने की कुंजी हैं। मानव की सफलता उसकी संगठित शक्ति में है, जंग के मैदान में नहीं।' इन वक्तव्यों से संकेत मिलता है कि सुरक्षा परिषद के सुधार और विस्तार के लिए आम सहमति बन चुकी है। दक्षिण अफ़्रीक़ा के राष्ट्रपति रामफोसा ने भी सुरक्षा परिषद में सुधार करने और

अभिमत



शिवकांत शर्मा

अफ़्रीक़ा को स्थायी सीट देने की मांग रखी।

महासचिव गुटेरेस ने माना है कि अफ़्रीक़ा को सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट देने पर सहमति हो चुकी है, पर सुधार और विस्तार की प्रक्रिया क्या हो और इसकी शुरुआत कब हो, इसे लेकर सहमति नहीं बन पा रही। लैटिन अमेरिका से ब्राजील को स्थायी सदस्यता देने पर भी किसी को आपत्ति नहीं है। मसला विश्व की दो तिहाई आबादी और लगभग आधी अर्थव्यवस्था वाले एशिया का है, जिसका प्रतिनिधित्व अकेले चीन के पास है। यूरोप के पास रूस, फ्रांस और ब्रिटेन की तीन सीटें हैं। इसलिए कुछ देशों का सुझाव है कि इन तीन देशों में से कम से कम एक को अपना वीटो अधिकार और सीट छोड़ देनी चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के आठ दशकों में विश्व के सामरिक और आर्थिक समीकरण पूरी तरह बदल जाने के बावजूद वीटो अधिकार वाले पांचों स्थायी सदस्यों में से कोई अपने वीटो अधिकार और स्थायी सीट को छोड़ने को तैयार नहीं है। स्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ाने पर आम सहमति है, परंतु चीन को वीटो अधिकार वाले सदस्यों की संख्या बढ़ाना मंज़ूर नहीं, ख़ासकर एशिया से जहां स्थायी सदस्यता के दोनों दावेदारों, भारत और जापान पर वह



अलग-अलग कारणों से संदेह करता है। यह समय की विडंबना है कि भारत ने जिस चीन को मान्यता देने में पहल की थी और सुरक्षा परिषद में उसकी स्थायी सीट को सिद्धांत के तौर पर लेने से मना कर दिया था, आज वही चीन भारत की स्थायी सदस्यता के मार्ग में आड़े आ रहा है।

अमेरिका भी भारत की ख़ेमेबाज़ी से परे अवसरानुकूल कूटनीति को लेकर आशंकित रहा है। इसका नवीनतम उदाहरण भारत का रूस के ख़िलाफ़ आर्थिक प्रतिबंधों में शामिल न होना और यूक्रेन पर रूसी हमले के निंदा प्रस्तावों से दूर रहना है। इसलिए वह भारत को वीटो अधिकार वाली स्थायी सदस्यता देने का समर्थन कर ही देगा, यह सुनिश्चित नहीं। वीटो अधिकार के बिना सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से अनुचित निर्णयों पर तमाशबीन बने रहने की बेचारगी के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा। इसलिए भारत की दिलचस्पी ऐसी सदस्यता में नहीं है। या तो सभी अपने-अपने वीटो अधिकारों का परित्याग करें, जिसकी संभावना कम है या फिर नए सदस्यों को भी वीटो अधिकारों के साथ शामिल किया जाए, ताकि वे यूक्रेन पर रूसी हमले जैसे नियमों को ताक़ पर रखकर किए जाने वाले संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उल्लंघनों को यदि न भी रोक सकें, तो भी कम से कम संयुक्त राष्ट्र के नाम पर इराक़ पर किए गए हमले जैसी विवादास्पद कार्रवाइयों को तो रोक सकें। यूक्रेन की अखंडता और संप्रभुता और फ़िलिस्तीनियों के अस्तित्व की रक्षा करने में संयुक्त राष्ट्र की बेचारगी दिखाती है कि उसकी संस्थाएं कितनी अयोग्य और अक्षम हो चुकी हैं। वैश्विक व्यवस्था को बहाल करने के लिए नाम के सुधारों की नहीं, बल्कि कारगर सुधारों की ज़रूरत है, जो मनमानी को रोक सकें। आतंकवाद की सर्वमान्य परिभाषा तय करने और उसकी रोकथाम के लिए वैश्विक रणनीति बनाने की भी ज़रूरत है। साइबर, समुद्र और अंतरिक्ष में व्यवस्था क़ायम रखना भी बड़ी वैश्विक चुनौती है। ■■

(साभार : एएफ़ईआईएएस)

यूक्रेन की अखंडता और संप्रभुता और फलस्तीनियों के अस्तित्व की रक्षा करने में संयुक्त राष्ट्र की बेचारगी दिखाती है कि उसकी संस्थाएं कितनी अयोग्य और अक्षम हो चुकी हैं। वैश्विक व्यवस्था को बहाल करने के लिए नाम के सुधारों की नहीं, बल्कि कारगर सुधारों की जरूरत है, जो मनमानी को रोक सकें।

अभेद्य नहीं है षड्यंत्र का यह दुश्चक्र



समाधान



सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी

इस्राईल के बन जाने के बाद भी साम्राज्य विस्तार का सिलसिला ख़त्म नहीं हुआ। पिछले 75 वर्षों में, इस्राईल लगातार अपने इलाक़े में विस्तार किए जा रहा है। किसी इंटरनेशनल क़ानून या संयुक्त राष्ट्र के किसी प्रस्ताव की न वह परवाह करता है और न पश्चिमी सत्ता को इससे कोई दिलचस्पी है कि उससे उन क़ानूनों की पाबंदी कराए। फ़िलिस्तीनियों की कुल आबादी यहूदी आक्रमणकारियों की आबादी के दो गुना से ज़्यादा है, जिसका लगभग आधा हिस्सा विदेशों के शरणार्थी हैं। जो आबादी फ़िलिस्तीन की सीमा में है वह भी यहूदी आबादी से ज़्यादा है। इस आबादी को दो छोटे और एक-दूसरे से अलग क्षेत्रों (ग़ज़ा और पश्चिमी किनारा या west bank) में क़ैद करके रखा गया है। इसमें भी एक क्षेत्र यानी पश्चिमी किनारे को छोटे-छोटे एक-दूसरे से अलग इलाक़ों में तक़सीम कर दिया गया है। एक फ़िलिस्तीनी देहात है, तो उसके चारों तरफ़ 'इस्राईली सेट्लमेंट' हैं।

पश्चिमी किनारे के एक गांव से दूसरे गांव जाने के लिए इस्राईली आबादियों से गुज़रना होता है जिसकी कठिनाइयां नाक़ाबिले बयान हैं। इस ज़ालिमाना बंटवारे को ओस्लो ने ज़ोन A,B,C बनाकर औचित्य दे दिया है, लेकिन इस ज़ुल्म पर भी इस्राईल रुका नहीं है, बल्कि जो इलाक़े ओस्लो समझौते में फ़िलिस्तीनी इलाक़े क़रार दिए गए थे उनमें भी नए सेट्लमेंट बनाकर लगातार विस्तार किए जा रहा है। इस फैलाव का ख़ास निशाना पूर्वी यरुशलम है जहां बैतुल-मुक़द्दस मौजूद है।

इस्राईल इस लगातार फैलाव से क्या चाहता है? उसका दावा क्या है? यह बात बाक़ायदा तौर पर कभी स्पष्ट नहीं की गई, लेकिन इस्राईल की राजनीतिक जमाअतों, मज़हबी अशराफ़िया और बौद्धिक हलक़ों में ग्रेटर इस्राईल Eretz Yisrael की अवधारणा हमेशा बहस का विषय रही है। ग्रेटर इस्राईल का क्या अर्थ है? उसे भी कभी स्पष्ट नहीं किया गया। इसका सबसे छोटा और कम से कम की संकल्पना, प्रशांत महासागर (Mediterranean Sea) से जार्डन नदी तक (From the River to the Sea) यह ऐतिहासिक फ़िलिस्तीन की पूरी सरज़मीन है यानी इस्राईल का मान्यता प्राप्त इलाक़ा, पश्चिमी किनारा, यरुशलम और ग़ज़्ज़ा।

यह बाइबल में दर्ज बनी-इस्राईल की ज़मीन, From Dan to Be'er Sheva का इलाक़ा है। दान और बर शेवा मौजूदा इस्राईल के आख़िरी उत्तर और दक्षिण शहर हैं। इसका मतलब यह है कि इस्राईल फ़िलिस्तीनियों से उनकी रही-सही मामूली ज़मीनें और उन पर उनके अत्यंत सीमित क़ब्ज़े को भी पूरे तौर पर ख़त्म करके इस पूरे इलाक़े को

इस्राईल में मिलाना चाहता है। दूसरी संकल्पना यह है कि पुराने फ़िलिस्तीन के पूरे इलाक़े के अलावा, जार्डन के कुछ इलाक़े, सीना और सीरिया की गोलान पहाड़ियां भी ग्रेटर इस्राईल का हिस्सा हैं। इस्राईल इन इलाक़ों पर क़ब्ज़े की कोशिशें करता रहा है और उन पर क़ाबिज़ भी रहा है।

तीसरी संकल्पना नील से फ़रात तक From Nile to Euphrates की संकल्पना है और यह सबसे ज़्यादा मशहूर तसव्वुर है। इसके सिलसिले में भी बाइबल का हवाला दिया जाता है। इसके मुताबिक़ पूरे फ़िलिस्तीन के अलावा, पूरा जार्डन, पूरा लेबनान, सीरिया का ज़्यादातर इलाक़ा, सीना के अलावा प्रशांत महासागर के किनारे मिस्र का लम्बा पूर्वी तटीय इलाक़ा, इराक़ का आधा से ज़्यादा हिस्सा (बसरा, नज़फ़ और कर्बला सहित), तुर्की का कुछ हिस्सा और सऊदी अरब का बड़ा हिस्सा शामिल है। (जिसमें कुछ कथनों के अनुसार मदीना भी आता है) यह पूरा इलाक़ा ग्रेटर इस्राईल की संकल्पना में शामिल है। नक़्शा देखें, इसमें ग्रेटर इस्राईल की काल्पनिक सरहदों को निशान-ज़द किया गया है।

इसके साक्ष्य मौजूद हैं कि ज़ायोनी नेताओं के ज़हनों में शुरू में यही कल्पना थी। यासर अरफ़ात के मुताबिक़ इस्राईल के झंडे में दो नीली पट्टियां, नील और फ़ुरात नदियों की नुमाइंदगी करती हैं और यह कि इस्राईल के100 शैक्ल के पुराने सिक्के में जो नक़्शे की शक्ल का स्केच है वह भी इसी विज़न को दिखाता है। इस्राईल के कुख्यात रक्षामंत्री, मोशे दयान का यह बयान भी रिकार्ड पर मौजूद है कि हमने यरुशलम हासिल कर लिया है और अब हम मदीना और बाबिल की तरफ़ बढ़ रहे हैं।

इस्राईल लगातार फैलाव से क्या चाहता है? उसका दावा क्या है? यह बात बाक़ायदा तौर पर कभी स्पष्ट नहीं की गई, लेकिन इस्राईल की राजनीतिक जमाअतों, मज़हबी अशराफ़िया और बौद्धिक हलक़ों में ग्रेटर इस्राईल Eretz Yisra-el की अवधारणा हमेशा बहस का विषय रही है। ग्रेटर इस्राईल का क्या अर्थ है? उसे भी कभी स्पष्ट नहीं किया गया। इसका सबसे छोटा और कम से कम की संकल्पना, प्रशांत महासागर (Mediterranean Sea) से जार्डन नदी तक (From the River to the Sea) यह ऐतिहासिक फ़िलिस्तीन की पूरी सरज़मीन है यानी इस्राईल का मान्यता प्राप्त इलाक़ा, पश्चिमी किनारा, यरुशलम और ग़ज़्ज़ा।

ये केवल भावनात्मक भाषणों या वैचारिक सोच का मामला नहीं है, बल्कि अपनी स्थापना के बाद से इस्राईल लगातार विस्तारवादी मन्सूबों को पूरे अहंकार के साथ अमल में ला रहा है। हर साल उसके कंट्रोल वाले इलाक़ों और यहूदी सेट्लमेंट के एरिया में इज़ाफ़ा हो रहा है। इन विस्तारों के लिए इस्राईल पूरी दुनिया की निंदा को स्वीकार कर लेता है। बड़े-बड़े युद्धों का ख़तरा भी मोल लेता है और अपनी आबादी को तरह-तरह के ख़तरों और नुक़सानों से दोचार करना बर्दाश्त कर लेता है, लेकिन विस्तार से बाज़ नहीं आता। इस रवैये की वजह से भी उपरोक्त सोच को दुनिया एक गंभीर ख़ुफ़िया मन्सूबा समझती है, जिस पर इस्राईल ख़ामोशी से अमल कर रहा है।

फ़िलिस्तीन के संघर्ष का एक बड़ा कारनामा यह है कि उसने इस्राईल की ताक़त, उसके अजेय होने का भरम और ताक़तवर और पूरा कंट्रोल रखने वाली 'यहूदी साज़िश' का भरम बुरी तरह बे-नक़ाब कर दिया है। उनके बारे में यह समझा जाता है कि वे एक ऐसी ताक़त के मालिक हैं कि उनकी मर्ज़ी और मंसूबाबंदी से दुनिया की सारी घटनाएं घटित होती हैं, अल्युमीनाई, फ़्री मेसन, ज़ायोनिज़्म आदि के सिलसिले में यह सोच मौजूद हैं कि हर छोटी-बड़ी घटनाएं उन्हीं की मर्ज़ी और प्लानिंग से होती हैं। राजनीतिक व आर्थिक मामलों से लेकर प्राकृतिक आपदाओं तक और वैज्ञानिक खोजों से लेकर, नैतिक एवं सांस्कृतिक सोच के चलन तक, इन्सानी ज़िंदगी का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां उनकी मर्ज़ी के बिना कुछ हो रहा हो। वे कभी नाकाम नहीं होते और न कभी कोई पत्ता उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हिल पाता है। वह मंसूबा बनाते हैं और दुनिया

का हर छोटा-बड़ा मामला, उनके मन्सूबे के मुताबिक़ हू-ब-हू अंजाम पाता है।

ये विचार निराशा को और बढ़ावा देते हैं। जब व्यक्ति यह महसूस करे कि उसके मामले पूरे तौर पर एक ऐसे अनदेखे दुश्मन के कंट्रोल में हैं जो दुनिया के सभी मामलों पर कंट्रोल रखता है, तो वह किस लिए संघर्ष करेगा? आम तौर पर ये घटनाएं ही होती हैं जो शोध और परीक्षण की प्रेरक होती हैं, लेकिन अगर किसी की सोच पर साज़िशी नज़रिये छाए हुए हों तो वह उसे एक साज़िश समझेगा और साज़िशियों को कोसने के सिवा कोई और काम उसके पास नहीं बचेगा।

फ़िलिस्तीनी संघर्ष का यह बहुत बड़ा कारनामा है कि उन्होंने इन कायराना सोचों की जड़ काट दी है। और क़ुरआन के इस ऐलान को चरितार्थ कर दिया है कि–

"यक़ीन जानो कि शैतान की चालें वास्तव में बहुत कमज़ोर हैं।"

(क़ुरआन, 4:76)

लोग कहते हैं कि इस्राईल एक छोटा-सा देश होकर भी सभी अरबों पर भारी है। बेशक अरबों की कोताही, कमज़ोरी और कायरता भी इस सूरतेहाल का एक अहम कारण है, लेकिन इस्राईल को बड़ी ताक़त और अजेय ताक़त समझना भी कमसमझी है। फ़िलिस्तीनियों से इस्राईल अकेला नहीं लड़ रहा है। उसकी पीठ पर सारी दुनिया की ताक़तें हैं। अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक और फ़ौजी ताक़त है। इस्राईल को अमेरिका की जो आर्थिक और फ़ौजी मदद हासिल है उसका अंदाज़ा भी मुश्किल है।

इस समय अमेरिका केवल सैनिक उद्देश्यों के लिए इस्राईल को सालाना 3.8 बिलियन डॉलर की सहायता देता है। यह बात स्पष्ट तौर पर लिखी हुई मौजूद है कि इस मदद का मक़सद पड़ोसियों के मुक़ाबले में इस्राईल को "सैनिक बढ़त" (Qualitative Military Edge) उपलब्ध करना है। उनके अलावा जर्मनी, इंग्लैंड, फ़्रांस, स्पेन आदि कई देश हैं जो इस्राईल की 75 वर्षों से लगातार आर्थिक मदद कर रहे हैं।

मदद केवल आर्थिक नहीं है। यह बड़ी ताक़तें इस्राईल को अतिआधुनिक हथियार उपलब्ध करती हैं। रक्षा टेक्नोलॉजी उपलब्ध करती हैं। उनको सैनिक ट्रेनिंग देते हैं। ज्वाइंट ऑप्रेशन करते हैं। उनकी मदद के लिए आस-पास फ़ौजी दस्ते तैनात रखते हैं। केवल इस्राईल की मदद के लिए पश्चिमी एशिया में अमेरिका के कई फ़ौजी अड्डे हैं। अमेरिका और यूरोपीय देशों की मध्य-पूर्व में पूरी रक्षा और विदेश नीति इस्राईल को बुनियाद बनाकर बनाई जाती है। इस्राईल की मदद इन सब देशों का सबसे बड़ा रक्षा उद्देश्य है।



ये ताक़तें केवल आर्थिक और रक्षा के मोर्चों पर ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और कूटनीति के मोर्चों पर भी हर-दम इस्राईल की मददगार बनी रहती हैं। इस्राईल के ज़ुल्म पर रोक लगाने के लिए सारी दुनिया एक ज़ुबान हो जाती

है, लेकिन बड़ी ताक़तें वीटो कर देती हैं। अब तक के इतिहास में संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में अमेरिका ने 82 बार वीटो के अधिकार का इस्तेमाल किया है, जिनमें 46 बार (आधा से ज़्यादा) इस्राईल को बचाने के लिए किया है। ब्रिटेन ने 29 में से 13 और फ्रांस ने 18 में से 11 बार इस्राईल की निंदा और उसकी सज़ाओं को रोकने के लिए वीटो का इस्तेमाल किया है। ऐसा महसूस होता है कि बड़ी ताक़तों को यह अलोकतांत्रिक अधिकार महज़ इस्राईल की सुरक्षा के लिए दिया गया है।

इन तथ्यों की मौजूदगी में कौन यह कह सकता है कि फ़िलिस्तीन के निहत्थे मुजाहिद केवल इस्राईल के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं? सच्चाई यह है कि वे सभी बड़ी आलमी ताक़तों की आक्रामकता का मुक़ाबला कर रहे हैं। इन्सानी इतिहास के सबसे ताक़तवर और बेपनाह ताक़त व संसाधनों से लैस गठबंधन को रोके हुए हैं।

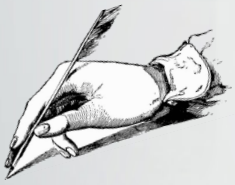
हमारे समय का यह बेमिसाल संघर्ष अब दुनिया को बदल रहा है। दुनिया का जनमत फ़िलिस्तीन के हक़ में और इस्राईल के ख़िलाफ़ जागरूक हो रहा है। दुनिया की हर क़ौम में भलाई के एलीमेंट्स मौजूद होते हैं। पश्चिमी देशों की जनता को उनकी सरकारों और मीडिया ने झूठ और प्रोपगंडे के ज़रिये सच्चाई से दूर रखा था। अब वे सच्चाई को जान रहे हैं तो सूरतेहाल यह है कि इस वक़्त इस्राईली ज़ुल्म के ख़िलाफ़ मुस्लिम देशों से कहीं ज़्यादा पश्चिमी देशों में प्रदर्शन हो रहे हैं। कनाडा, ब्रिटेन आदि के प्रधानमंत्रियों को जगह-जगह लोग घेर कर सवाल कर रहे हैं। बहुत से इस्राईली जर्नलों और राजनीतिज्ञों के लिए ब्रिटेन का दौरा नामुमकिन हो गया है, क्योंकि वहां की अदालतें (शासकों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़) ब्रिटेन के यूनीवर्सल ज्युरिसडिक्शन क़ानून के तहत उनके ख़िलाफ़ गिरफ़्तारी के आदेश जारी कर रही हैं। जनमत का दबाव इतना अधिक है कि फ्रांस जैसे देश को इस्राईली रवैये की निंदा करनी पड़ी और इस्राईल के ख़िलाफ़ संयुक्त राष्ट्र में वोट देना पड़ा। जगह-जगह जनता के आक्रोश का सामना करने के बाद कनाडा के प्रधानमंत्री को कहना पड़ा–

"दुनिया सब कुछ देख रही है। टीवी पर, सोशल मीडिया पर। हम घटनाओं की गवाहियां सुन रहे हैं। डॉक्टरों की, (मरने वालों के) घर वालों की, बच जाने वालों की, मरने वालों के मासूम बच्चों की। औरतों, बच्चों और दूध पीते बच्चों का ये क़त्ल सारी दुनिया देख रही है। इसका तुरंत रुक जाना ज़रूरी है।"

इस बयान में जनमत का दबाव साफ़ महसूस किया जा सकता है। स्पेन के उप-प्रधानमंत्री ने इस्राईल पर पाबंदियां लगाने की मांग की। यही मांग बेल्जियम की मंत्री ने भी कर दी। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के कई अधिकारियों की ओर से पेश किया गया सख़्त नोट भी मीडिया में बहस का मुद्दा रहा, जिसमें राष्ट्रपति बाइडन की इस्राईल की हिमायत की पॉलिसी से न केवल असहमति व्यक्त की गई, बल्कि राष्ट्रपति पर झूठ और युद्ध अपराध में मदद के गंभीर आरोप भी लगाए गए हैं। संघर्ष ने सारी दुनिया में यह सूरतेहाल पैदा की है कि न्यायप्रिय जनता अपने शासकों की अत्याचारपूर्ण, अमानवीय और अनैतिक नीतियों के बारे में जागरूक हो रही है।

यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि इस जागरूकता में दुनिया की मदद करें। सच्चाई को सामने लाएं। जनमत को सही दिशा दें। फ़िलिस्तीनियों की क़ुर्बानियों को बर्बाद न होने दें और न्याय की भरोसेमंद बुनियाद तलाश करने में विश्व समुदाय की मदद करें। हमारे देश का जनमत भी बड़ी अहमियत रखता है। फ़िलिस्तीन के पीड़ितों के लिए हमारी मदद यही होगी कि यहां की जनता सच्चाई से अवगत रहे और फ़िलिस्तीन की हिमायत में भारत की ऐतिहासिक भूमिका बहाल रहे। ■■





महमूद दरवेश

कविता

पहचान-पत्र

दर्ज करो!
कि मैं एक अरब हूं
चुराया है तूने मेरे पुरखों का बाग़ीचा
और मेरी उपजाऊ ज़मीन
और मेरे बच्चे भी
छोड़ा नहीं कुछ भी हमारे लिए-बस ये चट्टान ...
ले लेगी क्या इन्हें भी सरकार-
जैसा सुना है मैंने।

इसलिए पहले सफे के कपाल पर लिख दो-
नफ़रत नहीं करता मैं लोगों से
न ही ज़ोर-ज़बर्दस्ती
लेकिन अगर भूख सताएगी मुझे-
खा जाऊंगा मांस
मुझे महरूम करने वाले का
सावधान....
सावधान....
मेरी भूख से
मेरी लाल-लाल आंखों से।



महमूद दर्वेश (1942 - 2008)

महान फ़िलिस्तीनी कवि तथा लेखक। अपनी रचनाओं के लिए उन्हें फ़िलिस्तीन का राष्ट्र-कवि माना जाता है। उनकी रचनाओं में फ़िलिस्तीनी जनता के अपनी ज़मीन से उखड़ने और उनके संघर्षों की त्रासदी दिखाई देती है। उन्होंने लंबे समय तक पेरिस तथा बेरुत में निर्वासित जीवन व्यतीत किया। साहित्यिक जगत के अनेक सम्मान प्राप्त कर चुके दरवेश को अपनी कविताओं के पाठ के लिए जेल की सज़ा भी झेलनी पड़ी। दरवेश को अपने ही देश में विस्थापित जनता की आवाज़ माना जाता है।

मंथन

मिलावट का ज़हर

डॉ. प्रदीप कुमार



हमारे देश में खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट और प्रदूषण एक व्यापक समस्या है। फल, सब्ज़ियां, मांस, खाद्य तेल, शीतल पेय, यहां तक कि दवाइयां भी मिलावटी पाई जाती हैं। हवा में ज़हरीला उत्सर्जन है और पानी अक्सर पीने लायक़ नहीं रहता है।

देश में उपभोक्ता-हितों की रक्षा के लिए कठोर क़ानूनों की कोई कमी नहीं, मगर ज़मीनी स्तर पर उनके लागू न हो सकने के कारण ही स्थितियां बिगड़ी हैं, बल्कि कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों का दुस्साहस भी बढ़ा है। स्वच्छता एक ऐसी अपेक्षा है, जिसके लिए शासकीय हस्तक्षेप की ज़रूरत ही नहीं पड़नी चाहिए थी, मगर दुर्भाग्यवश हम इस मामले में एक लापरवाह समाज रहे हैं और मुनाफ़ाख़ोरी की बढ़ती प्रवृत्तियों ने इस लापरवाही को जानलेवा हद तक पहुंचाना शुरू कर दिया है।

अभी चंद रोज़ पहले ही देश के सबसे प्रसिद्ध देवालयों में से एक तिरुपति बालाजी के प्रसाद में कथित रूप से पशु वसा और मछली के तेल की मिलावट की ख़बर ने पूरे देश को झकझोरकर रख दिया था। करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था को इससे गहरी चोट लगी। धार्मिक शुचिता और आस्था से परे नागरिक हितों से भी जुड़ा यह एक गंभीर प्रश्न है कि हम जो खा-पी रहे हैं, वह कितना शुद्ध है और जो लोग इस पेशे से जुड़े हैं, वे कितनी ईमानदारी से लोगों के स्वास्थ्य का ख़्याल रखते हैं?

अभी चंद रोज़ पहले ही देश के सबसे प्रसिद्ध देवालयों में से एक तिरुपति बालाजी के प्रसाद में कथित रूप से पशु वसा और मछली के तेल की मिलावट की ख़बर ने पूरे देश को झकझोरकर रख दिया था। करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था को इससे गहरी चोट लगी। धार्मिक शुचिता और आस्था से परे नागरिक हितों से भी जुड़ा यह एक गंभीर प्रश्न है कि हम जो खा-पी रहे हैं, वह कितना शुद्ध है और जो लोग इस पेशे से जुड़े हैं, वे कितनी ईमानदारी से लोगों के स्वास्थ्य का ख़्याल रखते हैं?

निस्संदेह, भारत में आर्थिक समृद्धि के विस्तार के साथ बाहर खाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। पारंपरिक रूप से महिलाएं रसोई संभालती रही हैं, पर अब महिला कामगारों की बढ़ती संख्या को देखते हुए यह प्रवृत्ति सामाजिक ज़रूरत बनती जा रही है। लिहाज़ा हमें ऐसी संस्कृति विकसित करनी ही होगी, जिसमें बाहर खाना खाते हुए किसी क़िस्म की आशंका न रहे।

अक्सर सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थानों की ओर से ऐसे अध्ययन आते रहते हैं, जिनमें खाने-पीने की चीज़ों में मिलावट को लेकर चिंताजनक तथ्य दर्ज होते रहते हैं। इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि खाने-पीने की जो चीज़ें हमारे ज़िंदा और स्वस्थ रहने के लिए सबसे ज़रूरी हैं, वे भी मिलावट के कारोबारियों के स्वार्थों और अकूत मुनाफ़े की कमाई की मंशा की शिकार हैं। मिलावटी सामान का भ्रष्ट और

ख़तरनाक धंधा लंबे समय से चल रहा है और इस पर चिंता जताने में हमारे सत्ता-संस्थानों ने कोई कमी नहीं की है। मगर सच यह है कि अब तक ऐसी कोई व्यवस्था लागू नहीं हो सकी है जिसमें ऐसा अपराध करने वालों को पूरी तरह रोका जा सके।

दालों, घी, बेसन, मावा, पनीर जैसी अन्य खाने-पीने की चीज़ों में हो रही मिलावट स्वास्थ्य के लिए बेहद ख़तरनाक साबित होती जा रही है। यह किसी से छिपा नहीं है कि ज़्यादातर लोगों को मिलावटी सामान की पहचान करने के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं होती और बाज़ार में उन्हें जो भी मिलता



है, उसे ही वे अच्छा मान कर खाते-पीते हैं। उन्हें यह पता भी नहीं चल पाता है कि किस खाद्य पदार्थ के सेवन का उनकी सेहत पर कैसा असर पड़ता है। जबकि सच यह है कि जिस तरह का सामान हम आज खा-पी रहे हैं, उसमें कई में ऐसे घातक तत्त्व भी होते हैं जो लंबे समय में हमारी सेहत को जोखिम में डालते हैं।

किसी बीमारी के इलाज की स्थिति में शायद ही कभी जांच का सिरा यह होता है कि क्या मरीज़ ने किसी ऐसे खाद्य पदार्थ का इस्तेमाल किया है, जो उसके रोग के लिए ज़िम्मेदार है!

फ़िलहाल मिलावटख़ोरों के लिए आजीवन कारावास की सज़ा का प्रावधान भी है, लेकिन उसमें यह साबित करने की ज़रूरत पड़ती है कि मिलावटी पदार्थ की वजह से ही किसी व्यक्ति की मौत हुई है। ज़ाहिर है, यह साबित करना एक जटिल काम है और यही वजह है कि इस कारोबार में लगे लोग आराम से अपने मुनाफ़े का धंधा करते रहते हैं।

क़ायदे से अगर किसी खाद्य पदार्थ के सेवन से व्यक्ति बीमार हो जाता है या उसकी जान चली जाती है तो उस सामान को खुदरा विक्रेता से लेकर उसकी आपूर्ति करने से जुड़े नीचे से ऊपर तक के सभी लोगों को ज़िम्मेदार मान कर उनके लिए हत्या या हत्या के प्रयास जैसे क़ानूनों में दर्ज सख़्त सज़ा का प्रावधान होना चाहिए।

यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज कोई भी उत्पाद मिलावट से अछूता नहीं है। फिर ऐसा भी नहीं कि यह बात मशीनरी के संज्ञान में न हो, लेकिन इस पर नकेल कसने के मामले में वह ख़ामोशी की चादर ही अब तक ओढ़ती आई है। दिखावे के नाम पर कभी-कभार इक्का-दुक्का स्थानों पर छापेमारी तक ही सरकारी अभियान सीमित रहता है।

देश में उपभोक्ता-हितों की रक्षा के लिए कठोर क़ानूनों की कोई कमी नहीं, मगर ज़मीनी स्तर पर उनके लागू न हो सकने के कारण ही स्थितियां बिगड़ी हैं, बल्कि कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों का दुस्साहस भी बढ़ा है। स्वच्छता एक ऐसी अपेक्षा है, जिसके लिए शासकीय हस्तक्षेप की ज़रूरत ही नहीं पड़नी चाहिए थी, मगर दुर्भाग्यवश हम इस मामले में एक लापरवाह समाज रहे हैं और मुनाफ़ाख़ोरी की बढ़ती प्रवृत्तियों ने इस लापरवाही को जानलेवा हद तक पहुंचाना शुरू कर दिया है।

और तो और, तमाम स्वयंसेवी संस्थाओं की ओर से मिलावट के मामले उजागर कर इसकी रिपोर्ट शासन को सौंपने के बाद भी इस दिशा में कार्रवाई एक प्रकार से सिफ़र ही रही है।

दरअस्ल मिलावट रोकने में हमारे तंत्र की नाकामयाबी से आम आदमी में यह धारणा घर करती जा रही है कि हमारा सिस्टम इसे रोकने में कोई दिलचस्पी नहीं रखता। ऊपरी लेवल पर भले ही तरह-तरह के दावे किए जाते हैं, नीतियां बनाई जाती हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर कोई और ही खेल चलता रहता



है। कहने को तो देश भर में समय-समय पर पुलिस छापे की कार्रवाई करती रहती है, लेकिन आमतौर पर न तो किसी को सज़ा मिलती है, न किसी की दुकान के लाइसेंस ज़ब्त होते हैं। अक्सर मिलावटख़ोरों के ख़िलाफ़ ढीले-ढाले केस बनाए जाते हैं।

क्या इस बात से इन्कार किया जा सकता है कि राजनीतिक नेतृत्व व्यवसायी वर्ग को दुधारू गाय की तरह देखता है और उसे नाराज़ नहीं करना चाहता? इस बात को कारोबारी समझते हैं और इसका नाजायज़ फ़ायदा उठाते हैं।

मिलावट की समस्या तब तक दूर नहीं होगी, जब तक राजनीतिक नेतृत्व दृढ़ इच्छाशक्ति नहीं दिखाएगा। सिर्फ़ कुछ आकर्षक प्रतीकात्मक उपायों के बजाय कुछ ठोस काम करने होंगे। सबसे पहले तो मौजूदा क़ानूनों को सख़्ती से अमल में लाना होगा और निगरानी तंत्र को मज़बूत करना होगा। कई राज्यों में पर्याप्त फूड इंस्पेक्टर नहीं हैं। वहां भी उनकी नियुक्ति ज़रूरी है। खाद्य पदार्थों की जांच के लिए कई जगहों पर आधुनिक प्रयोगशालाएं स्थापित करनी होंगी।

यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज कोई भी उत्पाद मिलावट से अछूता नहीं है। फिर ऐसा भी नहीं कि यह बात मशीनरी के संज्ञान में न हो, लेकिन इस पर नकेल कसने के मामले में वह ख़ामोशी की चादर ही अब तक ओढ़ती आई है। दरअस्ल मिलावट रोकने में हमारे तंत्र की नाकामयाबी से आम आदमी में यह धारणा घर करती जा रही है कि हमारा सिस्टम इसे रोकने में कोई दिलचस्पी नहीं रखता। ऊपरी लेवल पर भले ही तरह-तरह के दावे किए जाते हैं, नीतियां बनाई जाती हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर कोई और ही खेल चलता रहता है।

साफ़ है कि मशीनरी की सुस्ती की वजह से ही मिलावटख़ोर मौज काट रहे हैं और वे बेख़ौफ़ हो अपनी कारगुज़ारियां जारी रखे हैं। यह सही है कि शासन और ज़िला प्रशासन की जवाबदेही तय कर उन्हें मिलावटख़ोरों पर नकेल कसने को सख़्त से सख़्त क़दम उठाने के निर्देश दिए गए हैं, लेकिन सरकार को एक बात गंभीरता से समझनी होगी कि सिर्फ़ निर्देश व घोषणा से काम नहीं चलने वाला। तंत्र को कसने के साथ ही उसे पूरी तरह सक्रिय करना होगा। उन कारणों का भी निदान आवश्यक है, जिनकी वजह से मिलावटख़ोरों पर अंकुश लगाने में असफलता ही हाथ लगती आई है।

मसलन, फूड सेफ्टी ऑथरिटी समेत अन्य ज़िम्मेदार महकमों में स्टाफ़ की कमी दूर करने के साथ ही उन्हें संसाधन भी मुहैया कराने होंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि केंद्र और राज्य सरकारें इस दिशा में गंभीरता से क़दम उठाएंगी, ताकि जनस्वास्थ्य से खिलवाड़ न होने पाए। ■■

ई-कचरे के ढेर पर



पर्यावरण



जितेंद्र गौतम

इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट (कचरा) आज विश्व की तेज़ी से बढ़ती समस्याओं में से एक है। भारत में न केवल अपना ई-अपशिष्ट उत्पन्न होता है, बल्कि यहां विकसित देशों से ई-अपशिष्ट का ढेर भी जमा हो रहा है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तीव्र बदलाव, इलेक्ट्रॉनिक साधनों का मूल्य कम होने के कारण विश्व में इलेक्ट्रॉनिक कचरा एक बड़ा संकट बन गया है। भारत में इसके निपटान एवं रीसाइक्लिंग के लिए उपयुक्त मूल ढांचे और विधियों के अभाव में यह समस्या दोगुनी तेज़ी से बढ़ रही है।

ई-कचरे से तात्पर्य उन सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा उनके पार्ट्स से है, जो उपभोगकर्ता द्वारा दोबारा इस्तेमाल में नहीं लाया जाता। वर्तमान दौर में मोबाइल फ़ोन, कम्प्यूटर, टेलीविज़न एवं ऑडियो सेट्स, प्रिंटर, आदि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के तेज़ी से अपग्रेड होने के कारण लोग बहुत कम अन्तराल पर इन्हें ख़रीदने लग गए हैं। बहुधा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के पुरज़े/हिस्से फेंक दिए जाते हैं। इन पुरज़ों की रीसाइक्लिंग प्रक्रिया बहुत सीमित होने के कारण विश्व में इनका निपटान स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रतिकूल प्रभाव दिखा रहा है।

वर्ष 2011 में भारत सरकार ने ई-कचरा प्रबंधन के नियम बनाए गए थे, जोकि ई-कचरे से जुड़ी प्रमुख दिक़्क़तों को निपटा पाने में नाकाम रहे हैं। उसी साल भारत दक्षिण एशिया में दुनिया के सबसे अधिक ई-कचरा उत्पन्न करने वाले देशों में शामिल है और यह मोबाइल फ़ोन, लैपटॉप, डेस्कटॉप और अन्य उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों से हर वर्ष 16 लाख टन कचरा उत्पन्न करता है। इसमें से क़रीब 67 फ़ीसदी कचरा ऐसा होता है जिसमें

लेड, कैडमियम, मर्करी, आर्सेनिक, एस्बेस्टॉस सहित तमाम नुक़सानदायक तत्त्व शामिल होते हैं जो इस कचरे के साथ ज़मीन में मिल जाते हैं और न केवल आम लोगों बल्कि वनस्पतियों के लिए भी स्वास्थ्य तथा पर्यावरण संबंधी ख़तरे उत्पन्न करते हैं।

इस समस्या का दूसरा पहलू यह है कि ई-कचरे को रीसाइकल करने का 90 प्रतिशत काम असंगठित क्षेत्र के लोगों द्वारा किया जाता है जो असुरक्षित हालात में अंजाम दिए जाते हैं और बच्चों से भी यह काम कराया जाता है। वर्ष 2016 में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने इस समस्या को हल करने के लिए अधिक ढांचागत ई-कचरा प्रबंधन नियम प्रस्तुत किए, जिन्होंने इस नियमों के दायरे में आने वाले उत्पादों की संख्या भी बढ़ाई और इनका निपटान करने वालों, विनिर्माताओं और रीसाइकल करने वालों की भूमिकाएं और कर्तव्य भी तय किए। उन्होंने विस्तारित उत्पादक जवाबदेही (ईपीआर) तय की जिसके तहत उत्पादकों को कहा गया कि वे ईपीआर के बदले अपने पूरी तरह उपयोग किए जा चुके उत्पाद वापस लें।

हालांकि इन नियमों के कारण संग्रहीत होने वाले ई-कचरे और उसके निपटान में काफ़ी तेज़ी आई, लेकिन उल्लंघन के लिए किसी दंडात्मक व्यवस्था के अभाव में यह आंकड़ा फिर भी कमज़ोर ही बना रहा। इन कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश में ई-कचरा प्रबंधन नियम 2022 ने इस क़ानून के तहत आने वाले उत्पादों के दायरे को विस्तृत किया और हर विनिर्माता और रीसाइकलर के लिए यह ज़रूरी किया कि वह केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा तैयार ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीयन कराए।

नियमों के मुताबिक़ ऐसे इलेक्ट्रॉनिक कलपुर्जों के निर्माण को सीमित किया गया जिनमें लेड और मर्करी जैसे ज़हरीले पदार्थ अधिकतम तय सीमा से अधिक थे। ऐसे कई क़ानून हैं जो पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित हैं, लेकिन उनका प्रवर्तन मुश्किल रहा है। इसके अलावा असंगठित क्षेत्र जिस क़ीमत पर काम करता है वह भी संगठित क्षेत्र के कारोबारियों को इस बाज़ार में प्रवेश करने से हतोत्साहित करती है।



कुछ अनुमानों के अनुसार, देश में ई-कचरे का उत्पादन सालाना 30 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है, जबकि कुछ अन्य अनुमानों के मुताबिक़ समुचित रिसाइक्लिंग सुविधाएं विकसित करने के लिए ज़रूरी फंड के 20 प्रतिशत से भी कम का आवंटन किया जा रहा है। ई-कचरे के निपटान और रीसाइक्लिंग को अधिक व्यवहार्य बनाने के सार्थक उपाय आने के बाद भी इस कारोबार की प्रकृति बदलती नहीं दिखती।

देश में हज़ारों उद्योगों से प्रतिदिन सैकड़ों टन ई कचरा निकलता है। छोटे उद्योगों व दुकानों का ई वेस्ट खुलेआम कहीं भी फेंक दिया जाता है। शहरों व गांवों में कम्प्यूटर हार्ड डिस्क, मोबाइल व अन्य अनुपयोगी गजट से निकलने वाले ई कचरे के निष्पादन की कोई योजना ही नहीं है। दरअस्ल डिजिटल क्रांति के दौर में ई कचरे का निपटान एक वैश्विक समस्या बन गया है। विश्व में प्रतिवर्ष पांच करोड़ टन से ज़्यादा ई कचरा उत्पादित होता है। यह पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक है।

भूमि में ई कचरा को दबाने से मृदा व भूमिगत जल के प्रदूषित हो जाने का ख़तरा होता है। ई कचरे को जलाने से वायु प्रदूषण फैलता है। विडंबना है कि लोग घरों से निकलने वाले ई कचरे को औने-पौने दामों पर कबाड़ियों को बेच दिया करते हैं। कबाड़ी ई कचरे में से चांदी, सोना जैसी क़ीमती धातुओं को निकालकर शेष हिस्से को प्रदूषण फैलाने के लिए छोड़ देते हैं।

ई-कचरे की बढ़ती समस्या को देखते हुए हाल में ही नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने केंद्रीय प्रदूषण

नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी), को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक कचरे के उत्पादन और निपटान पर रिपोर्ट दाख़िल करने का निर्देश दिया है। साथ ही ई-कचरा (प्रबंधन) नियमों का अनुपालन नहीं करने वाले राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के ख़िलाफ़ की जाने वाली कार्रवाई का उल्लेख करने के लिए कहा है। वह नियमों के वैज्ञानिक प्रवर्तन के लिए अपने पिछले निर्देशों का अनुपालन न करने का दावा करने वाली एक याचिका पर सुनवाई कर रहा था।

आदेश में एनजीटी के अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ ने कहा कि सीपीसीबी ने 30 अगस्त को एक रिपोर्ट दायर की थी, जिसमें ग्रीन पैनल के निर्देशों के संबंध में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा की गई कार्रवाई का उल्लेख था। न्यायिक सदस्य न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और विशेषज्ञ सदस्य ए. सेंथिल वेल भी पीठ में शामिल थे। उन्होंने कहा कि एक अप्रैल 2023 को ई-कचरा (प्रबंधन) नियम 2022 को लागू किए गए थे। इसके अलावा उल्लंघन के ख़िलाफ़ कार्रवाई करने के लिए सीपीसीबी को ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी।

पीठ ने कहा कि सीपीसीबी को नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने, प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने, बिजली व इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण में ख़तरनाक पदार्थों के उपयोग को कम करने के प्रावधानों को लागू करने के लिए अनियत जांच भी करनी पड़ी। पीठ ने पाया कि रिपोर्ट में सीपीसीबी ने कुछ राज्यों या केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा ग़ैर-अनुपालन या आंशिक ग़ैर-अनुपालन का उल्लेख किया है। लेकिन, रिपोर्ट उस ग़ैर-अनुपालन और सीपीसीबी द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई को प्रतिबिंबित नहीं करती है। ट्रिब्यूनल ने कहा कि रिपोर्ट वर्ष 2023-2024 के लिए हासिल किए गए लक्ष्य की सीमा को भी नहीं दर्शाती है। इसने सीपीसीबी को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा ई-कचरे के उत्पादन, उसके उपचार, उपचार सुविधा और अंतर से संबंधित विवरण प्रदान करने और एक नई रिपोर्ट दाख़िल करने का निर्देश दिया।



वर्तमान दौर में मोबाइल फोन, कम्प्यूटर, टेलीविज़न एवं ऑडियो सेट्स, प्रिंटर, आदि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के तेज़ी से अपग्रेड होने के कारण लोग बहुत कम अन्तराल पर इन्हें ख़रीदने लग गए हैं। बहुधा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के पुरज़े/हिस्से फेंक दिए जाते हैं। इन पुरज़ों की रीसाइक्लिंग प्रक्रिया बहुत सीमित होने के कारण विश्व में इनका निपटान स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रतिकूल प्रभाव दिखा रहा है। पुराना सामान ऐसा कचरा बन जाता है जो कभी ख़त्म नहीं होता। राज्य को ई कचरे के संकट से बचाने के लिए इसके वैज्ञानिक प्रबंधन की व्यापक पहल की आवश्यकता है।

ई-कचरे की बढ़ती समस्या को देखते हुए इसका प्रबंधन महत्वपूर्ण है। भारत सरकार ने ई कचरा निष्पादन नियम 2016 लागू किया है। इसके तहत इलेक्ट्रॉनिक सामान के उत्पादकों को भी जवाबदेह बनाया गया है। हालांकि राज्य में ई-कचरे पर जनजागरूकता का अभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को रिपेयर कराने को लोग प्राथमिकता नहीं देते हैं। पुराना सामान ऐसा कचरा बन जाता है जो कभी ख़त्म नहीं होता। राज्य को ई कचरे के संकट से बचाने के लिए इसके वैज्ञानिक प्रबंधन की व्यापक पहल की आवश्यकता है। ■■

गाली देना ग़लत क्यों ?

विचारणीय



अबू हस्सान

जो बुराई समाज में आम हो जाती है, वह Norm बन जाती है, और फिर उसे कोई उतना बुरा नहीं समझता, जबकि उससे कमतर दर्जे की बुराई, बशर्ते कि वह Norm न बनी हो, समाज में बुरी समझी जाती है। मसलन गाली देना समाज में Norm (आम बात) बन चुका है, जबकि गीत गुनगुनाना Norm नहीं है, कम से कम मुस्लिम समाज में तो बिल्कुल भी Norm नहीं है।

मेरा अपना नियम है कि मैं कभी गाली नहीं देता, किसी से लड़ाई-झगड़ा होने पर भी मैं उसके लिए गाली के शब्द प्रयोग नहीं करता, लेकिन मुझे गीत गुनगुनाने की आदत है। मेरी बीवी को यह बहुत बुरा लगता है और वह मुझे गीत गुनगुनाने से रोकती है, जबकि ख़ुद उसका हाल यह है कि वह बच्चों को डांटते वक़्त उन्हें गालियां भी दे डालती है, ऐसी गाली जिसकी चोट स्वयं उसपर पड़ रही होती है, पर उसे इसका एहसास नहीं होता। वैसे मेरी बीवी का रवैया अनोखा नहीं है, पूरे समाज का यही दस्तूर है और मेरी बीवी भी चाहे-अनचाहे इसी दस्तूर का पालन कर रही है।

गाली समाज में इतनी आम हो चुकी है कि अच्छे-ख़ासे दीनदार लोग भी इससे सुरक्षित नहीं हैं। मेरे एक दोस्त की पड़ोसन अपने बच्चे को डांट रही थी, मेरे दोस्त ने उसे समझाने की कोशिश की तो वह बोली, "आपको क्या पता, यह कितना हरामी बच्चा है!" इसपर मेरे दोस्त ने कह दिया, "आप कह रही हैं तो ठीक ही कह रही होंगी!" इस कटाक्ष को वह समझ गई, और चुपचाप अपने घर के अन्दर चली गई।

दरअस्ल गाली देने वालों का मामला यही है कि वे बेसोचे-समझे गन्दे-गन्दे शब्द ज़बान से निकालते हैं, जिनका कोई सम्बन्ध उस व्यक्ति से नहीं होता जिस पर उनका आक्रोश फूट रहा होता है, या अगर ताल्लुक़ होता भी है, तो उन शब्दों का उससे ज़्यादा सम्बन्ध उन लोगों से होता है, गाली देते वक़्त जिन्हें उसमें जोड़ा जाता है।



मसलन जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि किसी को 'हरामी' कहने का मतलब उसकी मां पर बदकारी का इलज़ाम लगाना है। इसी तरह मां, बहन और बेटी से जोड़कर जो गालियां दी जाती हैं, उनमें भी यही बेक़ुसूर मां, बहन और बेटियां पिसती हैं जो आपके लांछन का निशाना बनती हैं, जिन्हें ख़ुद पता नहीं होता कि उनके बारे में कहां क्या कुछ कहा जा रहा है।

इस लिहाज़ से देखा जाए तो गाली देना सबसे पहले तो झूठ की श्रेणी में आता है, क्योंकि जिस व्यक्ति को आप गाली दे रहे होते हैं, वह अस्ल में वह कुछ नहीं होता जो आप कह रहे होते हैं [और यह बात आप ख़ुद भी जान रहे होते हैं] दूसरे यह बोहतान (लांछन) लगाना भी है, क्योंकि इसमें ऐसे इलज़ामात लगाए जाते हैं, जो वास्तव में होते नहीं हैं। तीसरे यह ज़ुल्म भी है, क्योंकि इससे उन बेक़ुसूरों का अपमान किया जा रहा होता है, जिन्होंने आपका कोई क़ुसूर नहीं किया होता है। इसलिए गाली देना किसी भी तरह तर्कसंगत नहीं है। हां, अगर किसी ने कोई बुरा काम किया है, तो उसे बेशक बुरा कहिए, लेकिन इसके लिए जो शब्द भी इस्तेमाल करें, यह ध्यान रखें, उनकी चोट केवल सम्बन्धित व्यक्ति पर ही पड़ रही हो, न कि उन शब्दों से कुछ बेक़ुसूर लोगों पर बदकारी का झूठा आरोप लग रहा हो। ■■

धर्म, क़ानून और धार्मिक कट्टरता



मुसलमानों के विषय में अक्सर यह कहा जाता है कि ये धार्मिक रूप से बड़े कट्टर होते हैं और यह कि कट्टरता कोई अच्छी बात नहीं है। यह बात अगरचे वे लोग भी कहते हैं जो स्वयं इस देश में हिन्दुत्व के नाम पर एक विशेष संस्कृति (न कि धर्म) लागू करना चाहते हैं, और इसमें वे स्वयं न केवल अत्यन्त कट्टर होते हैं, बल्कि अपनी बात मनवाने के लिए कभी-कभी हिंसा का सहारा लेने में भी वे कोई बुराई नहीं समझते, मगर यहां ऐसे लोगों से हमारा सम्बोधन नहीं हैं, बल्कि हमारा सम्बोधन ऐसे लोगों से है जो धर्म और ईश्वर में विश्वास तो रखते हैं, परन्तु इस विषय में कट्टरता को पसन्द नहीं करते। उनका मानना है कि धर्म इंसान का व्यक्तिगत मामला है, और न केवल व्यक्तिगत मामला है, बल्कि धर्म का दायरा भी अत्यन्त सीमित है। इसके अन्तर्गत केवल पूजा-पद्धति या कुछ धार्मिक संस्कार आते हैं, जीवन के शेष मामलों में धर्म कोई मार्गदर्शन नहीं करता।

धर्म की यह संकीर्ण और ग़लत अवधारणा ही वह ग़लतफ़हमी पैदा करती है, जिसके चलते मुसलमानों को कट्टरपंथी समझा जाता है। ऐसे लोग जब देखते हैं कि मुसलमान कभी तीन तलाक़ के ख़िलाफ़ क़ानून बनने पर प्रतिरोध जता रहे हैं, तो कभी तलाक़ के बाद परित्यकता को आजीवन गुज़ारा भत्ता देने के ख़िलाफ़ अपना रोष व्यक्त कर रहे हैं (शाहबानो का प्रसिद्ध मामला), तो कभी स्कूलों में ड्रेसकोड के नाम पर मुस्लिम युवतियों को बेपर्दा करने वाले फ़ैसलों के ख़िलाफ़ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

यह सब देखकर एक आम पढ़े-लिखे हिन्दू को बड़ा आश्चर्य होता है



कि आख़िर मुसलमान ज़रा-ज़रा सी बात पर व्यथित क्यों हो जाते हैं? अगर सरकार उनकी बेहतरी के लिए उनके धार्मिक नियमों में हस्तक्षेप करके उनकी ही भलाई के लिए उनमें संशोधन करना चाहती है तो इसमें इतना बुरा मानने की क्या बात है? आख़िर ऐसी भी क्या कट्टरता कि सदियों पुराने नियमों पर इतना हठ किया जाए?

मुसलमानों के इस रवैये को समझने के लिए आपको अपने सोचने का ढंग बदलना होगा। इसके लिए आपको धर्म की जगह क़ानून को रखकर सोचना होगा।

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि वह जिस देश में रहता है, उसके संविधान और क़ानून को मानना उसके लिए केवल आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है। यहां कोई यह नहीं कह सकता कि क़ानून उसका निजी मामला है, वह कुछ बातों तक सीमित है, बाक़ी वह आज़ाद है। धर्म के विषय में बहुत से पढ़े-लिखे लोग जिस तरह

बड़े आराम से कहते हैं कि वे धर्म को नहीं मानते, या धर्म को केवल निजी मामला समझते हैं, या धर्म के प्रति उदासीन या धर्मनिरपेक्ष हैं, वे क़ानून के बारे में ऐसी कोई बात कभी नहीं कहते और न कह सकते हैं। आख़िर क्यों? यहां उनका लिबरलिज़्म कहां चला जाता है?

आज तक कोई व्यक्ति ऐसा नहीं मिला कि जो कहे कि वह 'क़ानून निरपेक्ष' है, या वह 'क़ानून की परवाह नहीं करता' या 'क़ानून को सिरे से मानता ही नहीं है' क्योंकि वह जानता है कि



ऐसा कहना उसके लिए अपराध है और क़ानून के प्रति उसकी यह उदासीनता उसे अपराधियों की कटेगरी में पहुंचा देती है, जिस पर उसे सज़ा भी मिल सकती है।

मुसलमानों के लिए धर्म भी क़ानून की हैसियत रखता है, इसलिए कोई भी ऐसा मुसलमान जो इस्लाम की शिक्षाओं से भली-भांति परिचित है, कभी यह नहीं कह सकता कि वह धर्म के प्रति उदासीन है या वह धर्म की परवाह नहीं करता– और जो मुसलमान ख़ुद को लिबरल ज़ाहिर करने के लिए ऐसा कहते भी हैं, वे वस्तुत: इस्लाम की मूल शिक्षाओं से अनजान होते हैं–क्योंकि ऐसा कहना इस्लाम के निकट वैसा ही अपराध है, जैसा कि किसी देश के क़ानून की नज़र में उसके किसी नागरिक का क़ानून के प्रति उदासीनता प्रकट करना।

अलबत्ता देश के क़ानून में और मुसलमानों की धार्मिक अवधारणा में यह भारी अन्तर है कि किसी देश के क़ानून का उल्लंघन करते ही जैसे ही आप क़ानून की नज़रों में आते हैं, आप को तुरन्त गिरफ़्तार करके मुक़द्दमा क़ायम कर दिया जाता है, और उसपर आपको जुर्माना भरना या सज़ा भी हो सकती है। मगर इस्लाम की मान्यता के अनुसार अल्लाह (ईश्वर) ने इनसान को अपने नियम एवं क़ानून की जानकारी देने के बावजूद उसे इस दुनिया में आज़ाद छोड़ दिया है कि वह चाहे तो ईश्वरीय क़ानून का पालन करे, और चाहे तो खुलेआम उल्लंघन करे। यहां उसका हाथ पकड़ने वाला कोई नहीं है, लेकिन जब वह मरने के बाद अपने अल्लाह के पास पहुंचेगा, तब उसे उसके कर्मों के अनुसार बदला मिलेगा। यदि उसने ईश्वरीय क़ानूनों का पालन किया होगा तो उसे स्वर्ग के रूप में इस आज्ञाकारिता का उत्तम प्रतिदान

अलबत्ता देश के क़ानून में और मुसलमानों की धार्मिक अवधारणा में यह भारी अन्तर है कि किसी देश के क़ानून का उल्लंघन करते ही जैसे ही आप क़ानून की नज़रों में आते हैं, आप को तुरन्त गिरफ़्तार करके मुक़द्दमा क़ायम कर दिया जाता है, और उसपर आपको जुर्माना भरना या सज़ा भी हो सकती है। मगर इस्लाम की मान्यता के अनुसार अल्लाह (ईश्वर) ने इनसान को अपने नियम एवं क़ानून की जानकारी देने के बावजूद उसे इस दुनिया में आज़ाद छोड़ दिया है कि वह चाहे तो ईश्वरीय क़ानून का पालन करे, और चाहे तो खुले आम उल्लंघन करे। यहाँ उसका हाथ पकड़ने वाला कोई नहीं है, लेकिन जब वह मरने के बाद अपने अल्लाह के पास पहुंचेगा, तब उसे उसके कर्मों के अनुसार बदला मिलेगा। यदि उसने ईश्वरीय क़ानूनों का पालन किया होगा तो उसे स्वर्ग के रूप में इस आज्ञाकारिता का उत्तम प्रतिदान मिलेगा, इसके विपरीत यदि उसने ईश्वरीय आदेशों की परवाह न करते हुए ईश्वरीय क़ानून का उल्लंघन किया होगा तो उसे इस अपराध के दंडस्वरूप नरक की यातना भोगनी होगी।



मिलेगा, इसके विपरीत यदि उसने ईश्वरीय आदेशों की परवाह न करते हुए ईश्वरीय क़ानून का उल्लंघन किया होगा तो उसे इस अपराध के दंडस्वरूप नरक की यातना भोगनी होगी।

मनुष्य द्वारा बनाए गए क़ानून और ईश्वरीय क़ानून (इस्लाम) में एक बड़ा अन्तर यह भी है कि मानव रचित क़ानून में मानव अपनी सुविधानुसार परिवर्तन और संशोधन कर सकता है और करता भी रहता है, मगर ईश्वर के बारे में यह सोचना भी मूर्खता होगी कि उसका कोई क़ानून त्रुटिपूर्ण हो सकता है। इसलिए उसके बनाए क़ानून में मानव अपनी मर्ज़ी से कोई संशोधन और फेर-बदल नहीं कर सकता। इसलिए मुसलमानों का शरीअत में हस्तक्षेप पर प्रतिरोध जताना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

यहां किसी को यह ग़लतफ़हमी न हो कि अगर मुसलमान अपने धर्म को क़ानून की तरह मानते हैं, तो फिर वे इसका उल्लंघन तो कर ही नहीं सकते, इसलिए मुसलमान जो कुछ भी करते हैं, उस सबको इस्लाम ही माना जाएगा, चाहे वह कितना ग़लत क्यों न नज़र आए।

जिस तरह अपने देश के प्रति वफ़ादार नागरिक के लिए देश का क़ानून सम्मान योग्य है, ठीक उसी तरह — बल्कि उससे भी ज़्यादा— एक सच्चे मुसलमान को अपने अल्लाह का क़ानून प्रिय है और वह किसी हाल में उसका उल्लंघन करने की नहीं सोचता। जिस प्रकार क़ानून के प्रति निष्ठा रखनेवाले नागरिक को 'क़ानूनी कट्टरपंथी' नहीं कहा जा सकता, उसी तरह इस्लामी क़ानून में आस्था रखनेवाले मुसलमान को भी 'कट्टरपंथी मुसलमान' कहना सर्वथा ग़लत है।

ऐसा सोचना एक और ग़लतफ़हमी होगी। बेशक मुसलमान अपने धर्म को क़ानून की तरह मानते हैं, लेकिन केवल वे मुसलमान जो वास्तव में इस्लाम की उन शिक्षाओं से अवगत हैं जो क़ुरआन और हदीसों में वर्णित हैं, और हर हाल में अल्लाह से बिन देखे डरते हैं। रहे इस्लाम की शिक्षाओं से अनभिज्ञ मुसलमान, तो चूंकि वे इस्लामी नियमों के उल्लंघन की कोई सज़ा मिलती नहीं देखते इसलिए निश्चिंत होकर जो चाहते हैं करते हैं।

जिस तरह अपने देश के प्रति वफ़ादार नागरिक के लिए देश का क़ानून सम्मान योग्य है, ठीक उसी तरह– बल्कि उससे भी ज़्यादा–एक सच्चे मुसलमान को अपने अल्लाह का क़ानून प्रिय है और वह किसी हाल में उसका उल्लंघन करने की नहीं सोचता। जिस प्रकार क़ानून के प्रति निष्ठा रखने वाले नागरिक को 'क़ानूनी कट्टरपंथी' नहीं कहा जा सकता, उसी तरह इस्लामी क़ानून में आस्था रखने वाले मुसलमान को भी 'कट्टरपंथी मुसलमान' कहना सर्वथा ग़लत है। ■■

मनुष्य की विवशता और अभिलाषा



मानव एक पूर्ण संसार चाहता है, परन्तु वह अपूर्ण संसार में रहने के लिए विवश है। हमारी प्रसन्नताएं अस्थाई हैं। हमारी प्रत्येक सफलता अपने साथ असफलता का परिणाम लिये हुए है। हम अपनी आशाओं की प्रातः बेला को पूरी तरह से देख भी नहीं पाते कि संध्या उसको घेर लेती है। हमारे जीवन रूपी वृक्ष की हरियाली और बसंत के कुछ वर्ष भी नहीं व्यतीत होने पाते कि दुर्घटना, विपत्तियां, वृद्धावस्था तथा मृत्यु उसे इस प्रकार समाप्त कर देती हैं, जैसे कि उसका कोई अस्तित्व ही न था।

पुष्प कितने सुन्दर होते हैं, परन्तु पुष्प मात्र इसलिए खिलते हैं कि वह मुरझा जाएं। सूर्य की किरणें कितनी आनन्ददायक हैं, परन्तु सूर्य के प्रकाश के लिये यह बाध्यता है कि वह कुछ देर के लिये चमके और इसके बाद रात्रि की कालिमा इसे ढक ले। एक जीवित व्यक्ति का अस्तित्व कितना चमत्कारी है, किन्तु कोई भी व्यक्ति अपने आपको



मृत्यु एवं दुर्घटना से नहीं बचा सकता। संसार के प्रत्येक वस्तु की यही स्थिति है।

यह संसार कल्पना की परिधि तक मोहक एवं अर्थपूर्ण है, परन्तु यहां की प्रत्येक विशेषता नश्वर है। यहां कुछ भी दोषरहित नहीं है, जो किसी प्रकार उससे अलग नहीं होता। जो ईश्वर स्वयं पूर्ण हो, वह एक ऐसी सृष्टि से संतुष्ट नहीं हो सकता, जो अपूर्ण हो। पूर्ण का अपूर्ण पर सन्तुष्ट हो जाना सम्भव नहीं है। यही इस बात का प्रमाण है कि वर्तमान संसार ही अन्तिम नहीं है। यह ज़रूरी है कि इसके बाद एक और संसार हो जहां वर्तमान संसार की कमियों की पूर्ति हो।

संसार के सम्बंध से यह मालूम हो चुका है कि यह नश्वर है। एक अनादि सृष्टा ही एक आदि सृष्टि को जन्म दे सकता है, यदि ईश्वर सार्वकालिक न हो तो वह सृष्टि कभी भी अस्तित्व में नहीं आ सकती, जो सार्वकालिक नहीं है। वास्तविकता यह है कि नश्वर सृष्टि को स्वीकार करने के लिए यह आवश्यक है कि हम एक अविनाशी स्रष्टा को स्वीकार करें। नश्वर सृष्टि का अस्तित्व

यह प्रमाणित करता है कि एक अनश्वर स्रष्टा मौजूद है, यदि स्रष्टा अनादि न होता तो वह सिरे से मौजूद ही न होता और जब स्रष्टा का अस्तित्व न होता तो सृष्टि का अस्तित्व संभव ही न होता।

स्रष्टा सार्वकालिक सदैव से था, इसलिए उसने अल्पकालिक को जन्म दिया, यदि वह सार्वकालिक न होता तो वह सिरे से मौजूद ही न होता तो फिर अल्पकालिक का अस्तित्व कहां से आता। ईश्वर अविनाशी है, अतः वह एक पूर्ण अस्तित्व है, क्योंकि अविनाशी होना पूर्णता का सर्वोच्च गुण है। जो अविनाशी होगा वह पूर्ण भी होगा। अविनाशिता एवं पूर्णता अभिन्न हैं जो एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते।

संसार ईश्वरीय गुणों का एक रूप है, परन्तु संसार की अपूर्णता एवं सीमितता यह बताती है कि यह वर्तमान संसार ईश्वर के गुणों का सम्पूर्ण प्रदर्शन नहीं है। पूर्ण एवं अनन्त ईश्वर के गुणों का प्रदर्शन वही है जो स्वयं भी पूर्ण एवं अनन्त हो। वास्तविकता यह है कि हमारी दुनिया को अभी एक और दुनिया की प्रतीक्षा है। ईश्वर के गुणों का यह रूप अपनी पूर्णता प्रकट करने के लिए अभी एक और प्रदर्शन की मांग करता है।

स्वर्ग-ईश्वर का वह संसार है, जहां उसके गुणों का प्रदर्शन अपनी चरम सीमा पर होगा। स्वर्ग उन सभी दोषों से मुक्त होगा, जिनकी हम वर्तमान संसार में अनुभूति करते हैं। स्वर्ग ईश्वर की उस पूर्ण सामर्थ्य की प्रस्तुति है, जो सौन्दर्य में स्थायित्व की विशेषता पैदा कर सकता है। वह आनन्द को असीमित बनाने का अधिकार रखता है। वह ऐसे संसार को जन्म दे सकता है, जहां अपार शांति हो तथा जिसका सुख स्थायी हो।

प्रत्येक व्यक्ति एक अदृश्य शान्ति की खोज में है। वह एक ऐसे पूर्ण संसार का इच्छुक है। जिसको वह अभी तक नहीं प्राप्त कर सका। जिस सृष्टि का स्रष्टा स्वयं अनादि एवं सार्वकालिक हो, वह अपने गुणों के अस्थायी तथा अल्पकालिक प्रदर्शन पर संतुष्ट नहीं हो सकता। जिस ईश्वर ने नास्ति को आस्ति में परिवर्तित किया, वह वास्तव में उस अस्तित्व में स्थायित्व की विशेषता उत्पन्न कर सकता है, और निश्चय ही दूसरा कार्य पहले कार्य की अपेक्षा कुछ कठिन नहीं है। शाश्वतता एक मुख्य ईश्वरीय गुण है फिर इस गुण में उसका कोई भागीदार नहीं है। यह एक उत्कृष्ट गुण है, जो मात्र एक ईश्वर के लिये ही सम्भव है।

मानव सदैव एक ऐसे जीवन की खोज में रहता है, जिसमें उसको स्थायी तथा असीम आनन्द प्राप्त हो और यह खोज उचित भी है और मानवीय प्रवृत्ति के अनुसार भी, परन्तु हमारे स्वप्नों का यह जीवन वर्तमान संसार में स्थाई आनन्द की व्यवस्था असम्भव है। यहां वे साधन उपलब्ध ही नहीं हैं, जो स्थायी आनन्द तथा सुखमय संसार को प्रकट करने के लिये आवश्यक हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने बताया कि संसार को ईश्वर ने परीक्षा स्थल बनाया है, न कि पुरस्कार प्राप्ति का स्थान। यहां मात्र वे साधन एकत्र किए गए हैं, जो व्यक्ति की परीक्षा के लिये आवश्यक हैं। सुखपूर्ण तथा आनन्दमय स्थायी जीवन प्राप्त करने के लिये जिन साधनों की आवश्यकता है, वे पारलौकिक जीवन में उपलब्ध होंगे। जो इस संसार के पश्चात हमारे समक्ष उपस्थित होने वाला है। हमारे और उस आगामी संसार के मध्य मृत्यु तक का फ़ासला है।

मानव सदैव एक ऐसे जीवन की खोज में रहता है। जिसमें उसको स्थायी तथा असीम आनन्द प्राप्त हो और यह खोज उचित भी है और मानवीय प्रवृत्ति के अनुसार भी, परन्तु हमारे स्वप्नों का यह जीवन वर्तमान संसार में स्थाई आनन्द की व्यवस्था असम्भव है। यहां वे साधन उपलब्ध ही नहीं हैं, जो स्थायी आनन्द तथा सुखमय संसार को प्रकट करने के लिये आवश्यक हैं।

मृत्यु व्यक्ति की परीक्षा की समाप्ति का समय है और उसी के साथ स्थायी संसार में प्रवेश का द्वार भी। मनुष्य को यह प्रयत्न करना चाहिये कि वह इस संसार में होने वाली परीक्षा में सफलता प्राप्त करे। वह ईशदूत के आदर्शों का अनुपालन करे तथा अपना स्वेच्छाचारी जीवन ईश्वरीय आदेशों के समक्ष समर्पित कर दे। जो लोग इस संसार की परीक्षा में सफल होंगे अगले जीवन में मनचाहा संसार प्राप्त करेंगे।

■■

कान्ति के वे सब्सक्राइबर

जिन्होंने अभी तक अपनी ख़रीदारी की रक़म जमा नहीं की है,

बराय मेहरबानी

इस QR Code

के ज़रिये जल्द अदायगी करें।

Name: KANTI

Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk

नोट :

अदायगी के बाद

स्क्रीनशॉट

इस नम्बर पर

(9818799223)

ज़रूर भेजें।

सेहत

संपादन प्रभाग



सर्दी, खांसी, ज़ुकाम :

मौसम के नखरे संक्रमण के ख़तरे

इस मौसम में बहुत सारे लोग बीमार पड़ते हैं। इन दिनों सर्दी-ज़ुकाम बुख़ार से बहुत सारे लोग ग्रस्त हैं। इसके अलावा डेंगू का प्रकोप भी बढ़ रहा है। मौसम में बदलाव आप भी महसूस कर रहे होंगे। हो सकता है, आपके आसपास कुछ लोग इस मौसम की समस्या से ग्रस्त हों। ऐसे लोगों के संपर्क में आने से आपको भी बुख़ार और खांसी-ज़ुकाम होने की संभावना हो सकती है।

ख़ासकर अगर आपके घर में बच्चे या बूढ़े हैं तो आपको अधिक संभल कर रहना चाहिए। नहीं तो ये बीमारियां आसानी से पूरे घर में फैल सकती हैं। आपको अपनी प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत रखना होगा। थोड़ा जीवन-शैली पर भी ध्यान देना होगा। अगर पूरी सर्दी के मौसम में आप थोड़ी सावधानी बरतें और अपनी सेहत पर ध्यान देंगे तो आप और आपका परिवार आसानी से बीमारियों से बचा रह सकता है।

इस मौसम में बहुत सारे लोग बीमार पड़ते हैं। इन दिनों सर्दी-ज़ुकाम बुख़ार से बहुत सारे लोग ग्रस्त हैं। इसके अलावा डेंगू का प्रकोप भी बढ़ रहा है। मौसम में बदलाव आप भी महसूस कर रहे होंगे। हो सकता है, आपके आसपास कुछ लोग इस मौसम की समस्या से ग्रस्त हों। ऐसे लोगों के संपर्क में आने से आपको भी बुख़ार और खांसी-ज़ुकाम होने की संभावना हो सकती है।

बुख़ार

चिकित्सक बताते हैं कि बुख़ार अपने आप में कोई रोग नहीं है। वह किसी संक्रमण का लक्षण है। जब आपके शरीर में कोई अवांछित बैक्टीरिया या वायरस पहुंच जाता है, तो शरीर उससे लड़ना शुरू कर देता है। इसी क्रम में वह गरम रहने लगता है, जिसे हम बुख़ार कहते हैं। बुख़ार के साथ-साथ खांसी और ज़ुकाम जैसी समस्याएं भी आ घेरती हैं।

सिर दर्द और बदन दर्द रहने लगता है। अगर ऐसी समस्या होती है, तो आपको अधिक से अधिक शरीर को आराम देना चाहिए। इसमें नींद लेनी चाहिए। यूं भी अगर आप पूरी नींद नहीं लेते हैं तो इसका प्रभाव आपकी प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यूनिटी पर पड़ सकता है। आप अगर पर्याप्त नींद नहीं लेंगे तो आपकी सेहत आमतौर पर ख़राब ही रहने लगेगी।

जब भी खांसी, ज़ुकाम और बुख़ार हो, गरिष्ठ भोजन से बचना चाहिए।

हल्का भोजन करें, ख़ूब पानी पीएं। तुलसी, अदरक, काली मिर्च, शहद का काढ़ा पीएं, तो इसमें लाभकारी रहता है। अगर खांसी अधिक हो रही है, तो अदरक को कद्दूकस करके उसमें थोड़ा शहद मिलाएं और खा लें, तुरंत आराम मिलेगा। बुख़ार की प्रकृति को जानना ज़रूरी है, क्योंकि यह कई वजहों से होता है। जांच करा कर ही दवा लें। मौसमी बीमारियों से बचने के लिए ज़रूरी है कि अपनी जीवन-शैली में बदलाव करें और अपने दैनिक जीवन में कुछ बातों का कड़ाई से पालन करें। जैसे सुबह गुनगुने पानी में शहद और नीबू नीचोड़ कर पीएं। चाय-काफ़ी कम कर दें।

भोजन में सावधानी बरतें



आपको फल और सब्ज़ियां अधिक से अधिक खानी चाहिए, क्योंकि इनमें एंटी आक्सीडेंट की मात्रा काफ़ी अधिक होती है। यह आपके ऊतकों को स्वस्थ बनाता और प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करता है। इससे आपको संक्रमण आदि से लड़ने में मदद मिलती है। इसलिए भोजन में हरी सब्ज़ियां ज़रूर शामिल करें।

हाथों को स्वच्छ रखें

किसी भी प्रकार के कीटाणुओं के लिए आपके हाथ, नाक और आंख प्रवेश द्वार होते हैं। जब भी आप खांसते या फिर छींकते हैं तो आपके मुंह से निकलने वाली बूंदें काफ़ी जल्दी दूसरों तक पहुंचती हैं और यहीं से संक्रमण की शुरुआत होती है। इसलिए अगर आपके आसपास भी कोई खांस या फिर छींक रहा है तो आपको अपने हाथों को तुरंत साफ़ कर लेना चाहिए। जब भी घर से बाहर निकलें, मास्क पहनें तो इस तरह के संक्रमण से बच सकते हैं। जब भी बाहर से आएं, तो हाथ-मुंह-पांव ज़रूर धोएं।

सर्दी से बचने के लिए भी अपनी साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखना है। सर्दी और बुख़ार आदि से बचने की सबसे आसान नुस्ख़ा यही है कि आपको अपने हाथों को कीटाणु आदि से बचा कर रखना होगा। इसलिए अपने हाथ धोते रहें।

सर्दी से बचें

यह तो सब जानते हैं कि तनाव से कई बीमारियां पैदा होती हैं। सर्दी-ज़ुकाम भी तनाव की वजह से पैदा हो सकता है। इसलिए किसी भी प्रकार के तनाव से बचें। अपनी मानसिक स्थिति को एक अच्छी सेहत प्रदान करना एक प्रक्रिया होती है। जोकि एक दो दिन का काम नहीं, बल्कि काफ़ी लंबे समय का काम होता है। स्ट्रेस हार्मोन से आपकी प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर हो सकती है।

इसलिए इस मौसम में आपको अधिक संभल कर रहना चाहिए। नहीं तो ये बीमारियां आसानी से पूरे घर में फैल सकती हैं। आपको अपनी प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत रखना होगा। थोड़ा जीवन-शैली पर भी ध्यान देना होगा। अगर पूरी सर्दी के मौसम में आप थोड़ी सावधानी बरतें और अपनी सेहत पर ध्यान देंगे तो आप और आपका परिवार आसानी से बीमारियों से बचा रह सकता हैं।

इसलिए योग और ध्यान करना न भूलें। जीवन-शैली में बदलाव करके तनाव-मुक्त रहा जा सकता है।

निर्जलीकरण से बचें

निर्जलीकरण यानी शरीर में पानी की कमी। शरीर में पानी की कमी होने से बुख़ार और खांसी-ज़ुकाम का प्रकोप बढ़ सकता है। इसलिए उचित मात्रा में पानी पीते रहना चाहिए। इसका अर्थ यह भी नहीं कि केवल पानी पीएं, आप गर्म सूप, फलों का रस, कोई अन्य गर्म तरल पदार्थ वग़ैरह भी पी सकते हैं। इससे आपको सर्दी भी नहीं लगेगी और आपकी प्रतिरोधक भी मज़बूत बनी रहेगी। इस तरह आप किसी भी प्रकार के सर्दी-ज़ुकाम के संक्रमण से बचे रहेंगे। निर्जलीकरण से बचने के लिए सेंधा नमक का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। (यह लेख सिर्फ़ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।) ■■



कौशल में है अवसर

पोस्ट ग्रेजुएशन के बाद छात्रों के हाथ में सिर्फ़ डिग्री होती है और फिर नौकरी के लिए उन्हें काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि डिग्री उन्हें विषय की सैद्धांतिक जानकारी देती है और किसी ख़ास कौशल में उनका प्रशिक्षण या तो नहीं होता या न के बराबर होता है। ऐसे में वे उद्योगों में काम करने के लिए तैयार नहीं माने जाते। यही कारण है कि भारतीय युवाओं का एक बड़ा हिस्सा ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद भी बेरोज़गार रह जाता है, क्योंकि वो "नौकरी के लिए तैयार" नहीं होते।

ऐसे में भारत में कई यूनिवर्सिटी और शिक्षण संस्थान हैं जहां से पढ़ाई के साथ-साथ कौशल के क्षेत्र में ख़ुद को निखारने और कोर्स के तुरंत बाद नौकरी के अवसर उपलब्ध होते हैं। देश में ऐसे कई संस्थान हैं जो कौशल प्रमाणपत्र से लेकर स्नातक, परा-स्नातक और पीएचडी तक के कार्यक्रम प्रदान करते हैं।



कौशल शिक्षा के माध्यम से, छात्रों को शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल सीखने का मौक़ा मिल सकता है। छात्रों को प्रशिक्षुता कार्यक्रमों में भाग लेने का मौक़ा मिलता है जहां वे औद्योगिक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। आइए जानते हैं ऐसे टॉप-5 बैचलर ऑफ़ वोकेशनल (बी.वोक.) पाठ्यक्रमों के बारे में जो 12वीं पास करने वाले छात्रों के करियर को नई दिशा दे सकते हैं।

1. इलेक्ट्रिकल स्किल्स

बी.वोक. कार्यक्रम का उद्देश्य आम तौर पर छात्रों को साउंड टेक्निकल नॉलेज और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के व्यावहारिक कौशल से लैस करना है। व्यावसायिक मॉड्यूल में इंजीनियरिंग विज्ञान, विद्युत सिद्धांत, विद्युत स्थापना, इलेक्ट्रॉनिक सिद्धांत, मोटर और ट्रांसफार्मर, सिंगल फेस और 3 फेस सर्किट, विद्युत नियंत्रण सर्किट, प्रोग्रामेबल लॉजिक कंट्रोलर प्रोग्रामिंग आदि शामिल है। इस कौशल को

सीखने के दौरान छात्र विभिन्न उद्योगों के सामान्य से लेकर वैश्विक मानकों के बारे में जानकारी हासिल करते हैं। छात्रों को उच्च स्तर पर इंटरैक्टिव और व्यावहारिक शिक्षण पाठ्यक्रम से गुज़रने का मौक़ा मिलता है, जिससे वे सभी तरह के इलेक्ट्रिक सर्किट और उपकरणों में समस्या निवारण को सामान्य से लेकर अत्याधुनिक कंसेप्ट और कौशल के साथ सीखते हैं।

अवसर : बी.वोक. करने के बाद छात्र ऑफ़िस मेंटनेंस इलेक्ट्रिशियन, इलेक्ट्रिकल इंस्टालेशन इलेक्ट्रिशियन, इलेक्ट्रिकल सर्विस फिटर और सुपरवाइज़र जैसे जॉब्स कर सकता है या फिर एम.वोक. कार्यक्रमों में शामिल होकर उच्च कुशल नौकरियों के लिए विकल्प चुन सकते हैं।



2. पॉली मैकेनिक स्किल्स

मशीनिंग, टर्निंग, मिलिंग, ग्राइंडिंग, हैंड स्किल्स, एसेम्बलिंग, पेना मेटिक्स, न्यूमेटिक्स, प्रोग्रामिंग और ऑपरेशन आदि। पॉली मैकेनिक में कुशल लोग प्रोडक्शन मशीनरी और उपकरणों के लिए पार्ट्स इंस्टाल कर सकते हैं। इस पेशे में लॉजिक और आटोमेशन कंट्रोल की ज़रूरत होती है, साथ ही, संबंधित बुनियादी विद्युत और सर्किट वाले काम में कौशल की आवश्यकता होती है।

अवसर : पॉली मैकेनिक डिग्री में बी.वोक. डिग्रीधारी कई तरह के विनिर्माण कौशल में प्रशिक्षित होते हुए संबंधित उद्योग में आसानी से काम करने में सक्षम हैं। औद्योगिक और विनिर्माण संयंत्रों की एक बड़ी श्रृंखला में उन्हें काम के अनुभव और संबंधित उद्योग की ज़रूरतों के आधार पर टैक्नीशियन, प्रैक्टिशनर और सुपरवाइज़र के रूप में नियुक्त किया जा सकता है।

3. कारपेंटर स्किल्स

कारपेंटरी में बी.वोक. डिग्री के तहत कैबिनेट बनाने, इंटीरियर वुडवर्क और फ़र्नीचर के निर्माण आदि कामों के लिए तैयार करता है। छात्र जर्मनी और अन्य यूरोपीय देशों से प्राप्त नवीनतम मशीनों पर काम करते हैं और नवीनतम लकड़ी के उपकरण और सामग्री का उपयोग करना सीखते हैं। वे विश्व स्तर के फ़र्नीचर और फिक्स्चर बनाने में सक्षम हो जाते हैं।

अवसर : जीवन शैली में परिवर्तन के साथ-साथ आधुनिक फर्निशिंग की मांग राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है। इतना ही नहीं डिग्री धारकों के लिए सुपरवाइज़र और लकड़ी उद्योग में प्रबंधक के रूप में पर्याप्त अवसर हैं। ई-कॉमर्स की दुनिया में भी इनोवेटिव फ़र्नीचर के लिए एक बड़ा बाज़ार बन गया है, ऐसे में छात्र ख़ुद अपना स्टार्टअप भी शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा एक और विकल्प फ़र्निशिंग ब्रांड के साथ मैन्युफैक्चरिंग का भी हो सकता है जो लकड़ी के फ़र्नीचर का बड़े पैमाने पर उत्पाद करते हैं।

4. ऑटोमोटिव स्किल्स

आटोमोटिव यानी मोटर वाहन कौशल में बी.वोक. के अंतर्गत छात्रों को ऑटोमोबाइल के सभी प्रमुख तत्व सिखाए जाते हैं, जैसे मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक, सॉफ्टवेयर और सेफ्टी इंजीनियरिंग ताकि इनका इस्तेमाल मोटरसाइकिलों का निर्माण व

परिचालन, मोटर वाहन और ट्रक और उनकी संबंधित उपप्रणालियों के निर्माण व डिजाइन में किया जा सके। पाठ्यक्रम के उन्नत संस्करण में इंजन के बारे में सिखाने से लेकर वाहनों को संशोधित करना बताया जाता है।

अवसर : किसी ऑटोमोटिव वर्कशॉप में काम करें या अपना ख़ुद का ऑटो वर्कशॉप खोलना मोटर वाहन में बी.वोक. डिग्री लेने वालों के लिए दो सबसे आकर्षक विकल्प हैं। विभिन्न ऑटोमोटिव कंपनियों के विनिर्माण संयंत्रों में मशीन ऑपरेटर, पर्यवेक्षकों और प्रबंधकों के रूप में कई अवसर भी हैं। बी.वोक. डिग्री धारकों को ऑटो विनिर्माण क्षेत्र, ऑटो सहायक क्षेत्र, अंतरराष्ट्रीय मानकों के डिजाइन और इंजीनियरिंग से जुड़े उत्पाद और ऑटो निर्माताओं के लिए समाधान, कनेक्टेड कार प्रणाली, ऑडियो एंड वीडियो प्रोडक्ट, उद्यम स्वचालन समाधान और इससे जुड़ी सेवाओं में कई अवसर मौजूद हैं।

5. आईटी और नेटवर्किंग हार्डवेयर स्किल्स

छात्रों को सूचना भंडारण, प्रसंस्करण और संचार के क्षेत्र में प्रशिक्षण मिलता है। आईटी और नेटवर्किंग कौशल में बी.वोक. के तहत कंप्यूटर का इस्तेमाल कर सकते हैं। नेटवर्किंग कंस्ट्रक्शन, नेटवर्क का उपयोग और प्रबंधन, जिसमें हार्डवेयर (केबल बिछाने, हब, पुल, स्विच, रूटर आदि) भी शामिल है। टेलीकम्युनिकेशन प्रोटोकॉल और सॉफ्टवेयर का चुनाव व इस्तेमाल, नेटवर्क का उपयोग और इस्तेमाल व ऑपरेशन नीतियों की स्थापना आदि।

एक नेटवर्क आर्किटेक्ट में सभी कर्मचारियों के इस्तेमाल के लिए



नेटवर्क सिस्टम बनाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करने जैसे कौशल का होना ज़रूरी है। इन नेटवर्कों में लोकल एरिया नेटवर्क (लेन), वाइड एरिया नेटवर्क (वेन), इंट्रा नेट्स और एक्स्ट्रा नेट्स शामिल हो सकते हैं। नेटवर्क की जटिलता संगठन के आधार पर भिन्न हो सकती है और कंपनी के पास इसके लिए एक समर्पित इंजीनियर हो सकता है या कई तकनीकी विशेषज्ञ, मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी के साथ मिलकर काम कर सकते हैं।

अवसर : डिजिटलीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी, स्मार्ट शहरों और औद्योगिक स्वचालन में वृद्धि की ओर देखते हुए आज इन क्षेत्रों में कौशल बहुत महत्वपूर्ण है। छात्र नेटवर्क विशेषज्ञ या नेटवर्क सेवा टेकनीशियन, नेटवर्क व्यवस्थापक, नेटवर्क इंजीनियर, नेटवर्क विश्लेषक/प्रोग्रामर, नेटवर्क प्रबंधक और नेटवर्क सोल्यूशन आर्किटेक्ट बनकर प्रबंधन या संगठनात्मक आवश्यकता के अनुसार नेटवर्क समाधान बनाने के लिए काम करने जैसे अवसरों को हासिल कर सकता है।

प्रमुख संस्थान

1. भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी-ये स्विस डुअल सिस्टम ऑफ़ स्किल्स एजुकेशन पर काम करता है, जिसका कांसेप्ट एक मशीन पर एक छात्र है।

2. राजस्थान आईएलडी स्किल यूनिवर्सिटी-ये एक ऐसा विश्वविद्यालय है जो मात्र कौशल आधारित प्रोग्राम पेश करता है।

देश में और भी कौशल विश्वविद्यालय हैं जो बीटेक, बीबीए, बीसीए, आदि जैसे औपचारिक पाठ्यक्रमों के साथ कौशल कार्यक्रम पेश करते हैं। (1) टीम लीज स्किल्स यूनिवर्सिटी अहमदाबाद (2) सिंबियोसिस स्किल एंड ओपन यूनिवर्सिटी, पुणे (3) हरियाणा विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी, गुड़गांव (4) सेकोम स्किल यूनिवर्सिटी, कोलकाता (5) सेंचुरियन यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर

यूजीसी ने सभी सार्वजनिक विश्वविद्यालयों को बी.वोक. और एम.वोक कार्यक्रम प्रदान करने की अनुमति दी है। कुछ विश्वविद्यालयों ने थीसिस की पेशकश शुरू कर दी है। एआईसीटीई भी इस प्रकार के कौशल कार्यक्रमों को बढ़ावा देता है।

■■



चेतना लौटने लगी। सांस में गंधक की तरह तेज़ बदबूदार और दम घुटाने वाली हवा भरी हुई थी। कोबायाशी ने महसूस किया कि बम के उस प्राण-घातक धड़ाके की गूंज अभी-भी उसके दिल में धंस रही है। भय अभी-भी उस पर छाया हुआ है। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा है। उसे सांस लेने में तकलीफ़ होती है, उसकी सांस बहुत भारी और धीमी चल रही है।

हारे हुए कोबायाशी का ज़र्ज़र मन इन दोनों अनुभवों से खीझकर कराह उठा। उसका दिल फिर ग़फ़लत में डूबने लगा। होश में आने के बाद, मृत्यु के पंजे से छूटकर निकल आने पर जो जीवनदायिनी स्फूर्ति और शांति उसे मिलनी चाहिए थी, उसके विपरीत यह अनुभव होने से ऊबकर, तन और मन की सारी कमज़ोरी के साथ वह चिढ़ उठा। जीवन कोबायाशी के शरीर में अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए विद्रोह करने लगा। उसमें बल का संचार हुआ।

कोबायाशी ने आंखें खोलीं। गहरे कुहासे की तरह दम घुटाने वाला ज़हरीला धुआं हर तरफ़ छाया हुआ था। उसके स्पर्श से कोबायाशी को अपने रोम-रोम में हज़ारों सुइयां चुभने का-सा अनुभव हो रहा था। रोम-रोम से चिनगियां छूट रही थी। उसकी आंखों में भी जलन होने लगी; पानी आ गया। कोबायाशी ने घबराकर आंखें मीच लीं।

कहानी



अमृतलाल नागर

लेकिन आंखें बंद कर लेने से तो और भी ज़्यादा दम घुटता है। कोबायाशी के प्राण घबरा उठे। वे कहीं भी सुरक्षित न थे। मौत अंधेरे की तरह उस पर छाने लगी। यह हीनावस्था की पराकाष्ठा थी। कोबायाशी की आत्मा रो उठी। हारकर उसने फिर अपनी आंखें खोल दीं। हठ के साथ वह उन्हें खोले ही रहा। ज़हरीला धुआं लाल-मिर्च के पाउडर की तरह उसकी आंखों में भर रहा था। लाख तकलीफ़ हो, मगर वह दुनिया को कम-से-कम देख तो रहा है। बम गिरने के बाद भी दुनिया अभी नेस्तनाबूद नहीं हुई—आंखें खुली रहने पर यह तसल्ली तो उसे हो ही रही है। गर्दन घुमाकर उसने हिरोशिमा की धरती को देखा, जिस पर वह पड़ा हुआ था। धरती के लिए उसके मन में ममत्व जाग उठा। कमज़ोर हाथ आप-ही-आप आगे बढ़कर अपने नगर की मिट्टी को स्पर्श करने का सुख अनुभव करने लगे।

...मन कहीं खोया। अपने अंदर उसे किसी ज़बरदस्त कमी का एहसास हुआ। यह एहसास बढ़ता ही गया। आंतरिक हृदय से सुख का अनुभव करते ही उसकी कल्पना दुःख की ओर प्रेरित हुई। स्मृति झकोले खाने लगी।

चेतन बुद्धि पर छाए हुए भय से बचने के लिए अंतर-चेतना की किसी बात की विस्मृति का मोटा पर्दा पड़ रहा था। मौत के चंगुल से छूटकर निकल आने पर, पार्थिवता की बोझ-स्वरूप धरती के स्पर्श से, जीवन को स्पर्श

करने का सुख उसे प्राप्त हुआ था; परंतु भावना उत्पन्न होते ही उसके सुख में धुन भी लग गए। भय ने नीवें डगमगा दीं। अपनी अनास्था को दबाने के लिए वह बार-बार ज़मीन को छूता था। अंतर के अविश्वास को चमत्कार का रूप देते हुए, इस खुली जगह में पड़े रहने के बावजूद अपने जीवित बच जाने के बारे में उसे भगवान की लीला दिखाई देने लगी।

करुणा सोते की तरह दिल से फूट निकली। पराजय के आंसू इस तरह अपना रूप बदलकर दिल में घुमेड़े ले रहे थे। ज़हरीले धुएं के कारण आंखों में भरे हुए पानी के साथ-साथ वे आंसू भी घुल-मिलकर गाल से ढुलकते हुए ज़मीन पर टपकने लगे।

बेहोश होने से कुछ मिनट पहले उसने जिस प्रलय को देखा था, उसकी विकरालता अपने पूरे वज़न के साथ कोबायाशी की स्मृति पर आघात करके उसके टुकड़े-टुकड़े कर रही थी। वह ठीक-ठीक सोच नहीं पा रहा था कि जो दृश्य उसने देखा, वह सत्य था क्या?... धड़ाका! जूड़ी-बुख़ार की कंपकंपी की तरह ज़मीन कांप उठी थी। बम था—दुश्मनों का हवाई हमला। हज़ारों लोग अपने प्राणों की पूरी शक्ति लगाकर चीख़ उठे थे।...कहां हैं वे लोग? वे प्राणांतक चीख़ें, वह आर्त्तनाद जो बम के धड़ाके से भी अधिक ऊंचा उठ रहा था—वह इस समय कहां है? ख़ुद वह इस समय कहां है? और...

कुछ खो देने का एहसास फिर हुआ। कोबायाशी विचलित हुआ। उसने कराहते हुए करवट बदलकर उठने की कोशिश की, लेकिन उसमें हिलने की भी ताब न थी। उसने फिर अपनी गर्दन ज़मीन पर डाल दी। हवा में काले-काले ज़र्रे भरे हुए थे। धुओं, गर्मी, जलन, प्यास—उसका हलक़ सूखा जा रहा था। बेचैनी बढ़ रही थी। वह उठना चाहता था। उठकर वह अपने चारों तरफ़ देखना चाहता था। क्या?...यह अस्पष्ट था। उसके दिमाग़ में एक दुनिया चक्कर काट रही थी। नगर, इमारतें, जनसमूह से भरी हुई सड़के, आती-जाती सवारियां, मोटरें, गाड़ियां, साइकिलें...और... और...दिमाग़ इन सब में खोया हुआ कुछ ढूढ रहा था; अटका, मगर फ़ौरन ही बढ़ गया। जीवन के पच्चीस वर्ष जिस वातावरण से आत्मवत् परिचित और घनिष्ठ रहे थे, वह उसके दिमाग़ की स्क्रीन पर चलती-फिरती तस्वीरों की तरह नुमायां हो रहा था; लेकिन सब कुछ अस्पष्ट, मिटा-मिटा-सा! कल्पना में वे चित्र बड़ी तेज़ी के साथ झलक दिखाकर बिखर जाते थे। इससे कोबायाशी का मन और भी उद्विग्न हो उठा।

प्यास बढ़ रही थी। हलक़ में कांटे पड़ गए थे।—और उसमें उठने की भी ताब न थी। एक बूंद पानी के लिए ज़िंदगी देह को छोड़कर चले जाने की धमकी दे रही थी, और शरीर फिर भी नहीं उठ पाता था। कोबायाशी को इस वक़्त मौत ही भली लगी। बड़े दर्द के साथ उसने आंखें बंद कर लीं।

मगर मौत न आई।

कोबायाशी सोच रहा था—"मैंने ऐसा कौन-सा अपराध किया, जिसकी यह सज़ा मुझे मिल रही है? अमीरों और अफ़सरों को छोड़कर कौन ऐसा आदमी था, जो यह लड़ाई चाहता था? दुनिया अगर दुश्मनी निकालती, तो उन लोगों से। हमने उनका क्या बिगाड़ा था? हमें क्यों मारा गया?...प्यास लग रही है। पानी न मिलेगा। ऐसी बुरी मौत मुझे क्यों मिल रही है? ईश्वर! मैंने ऐसा क्या अपराध किया था?

करुणासागर ईश्वर कोबायाशी के दिल में उमड़ने लगा। आंखों से गंगा-जमुना बहने लगी। सबसे बड़े मुंसिफ़ के हुज़ूर में लाठी और भैंसवाले न्याय के विरुद्ध वह रो-रोकर फ़रियाद कर रहा था। आंसू हलाकान किए दे रहे थे। लंबी-लंबी हिचकियां बंध रही थी, जिनसे पसलियों को और सारे शरीर को, बार-बार झटके लग रहे थे। इस तरह, रोने से दम घोंटने वाला ज़हरीला धुआं जल्दी-जल्दी पेट में जाता था। उसका जी मिचलाने लगा। उसके प्राण अटकने लगे।

—प्राणों के भय से एक लंबी हिचकी को रोकते हुए जो सांस खींची तो कई पल तक वह उसे अंदर ही रोके रहा; फिर सुबकियों में वह धीरे-धीरे टूटी। रो भी नहीं सकता!—कोबायाशी की आंखों में फिर पानी भर आया। कमज़ोर हाथ उठाकर उसने बेजान-सी उंगलियों से अपने आंसू पोंछे।

आंखों के पानी से उंगलियों के दो पोर गीले हुए; उतनी जगह में तरावट आई। कोबायाशी की कांटों-पड़ी ज़बान और हलक़ को फिर से तरावट की तलब हुई। प्यास बगुले-सी फिर भड़क उठी। हठात् उसने अपनी आंसुओं से नम उंगलियां ज़बान से चाट लीं। दो उंगलियों के बीच में बिखरी हुई आंसुओं की एक बूंद उसकी ज़बान का ज़ायक़ा बदल गई। और उसे पछतावा होने लगा—इतनी देर रोया, मगर बेकार ही गया। उसकी फिर से रोने की तबिअत होने लगी, मगर आंसू अब न निकलते थे। कोबायाशी के दोनों हाथों में ताक़त आ गई। नम आंखों से लेकर गीले गालों के पीछे कनपटियों तक आंसू की एक बूंद जुटाकर अपनी प्यास बुझाने के लिए वह उंगलियां दौड़ाने लगा। आंसू ख़ुश्क हो चले थे; और कोबायाशी की प्यास दम तोड़ रही थी।

चक्कर आने लगे। ग़फ़लत फिर

बढ़ने लगी। बराबर सुन्न पड़ते जाने की चेतना अपनी हार पर बुरी तरह से चिढ़ उठी। और उसकी चिढ़ विद्रोह में बदल गई। ग़ुस्सा शक्ति बनकर उसके शरीर में दमकने लगा—क़ाबू से बाहर होने लगा। माथे की नसें तड़कने लगीं। वह एकदम अपने क़ाबू से बाहर हो गया। दोनों हाथ टेककर उसने बड़े ज़ोम के साथ उठने की कोशिश की। वह कुछ उठा भी। कमज़ोरी की वजह से माथे में फिर मुरछा आने लगी। उसने संभाला—मन भी, तन भी। दोनों हाथ मज़बूती से ज़मीन पर टेके रहा। हांफते हुए, मुंह से एक लंबी सांस ली; और अपनी भुजाओं के बल पर घिसटकर वह कुछ और उठा। पीठ लगी तो घूमकर देखा—पीछे दीवार थी। उसने ज़िंदगी की एक और निशानी देखी। कोबायाशी का हौसला बढ़ा। मौत को पहली शिकस्त देकर पुरुषार्थ ने गर्व का बोध किया; परंतु पीड़ा और जड़ता का ज़ोर अभी भी कुछ कम न था। फिर भी उसे शांति मिली। दीवार की तरफ़ देखते ही ध्यान बदला। सिर उठाकर ऊंचे देखा, दीवार टूट गई थी। उसे आश्चर्यमय प्रसन्नता हुई। दीवार से टूटा हुआ मलबा दूसरी तरफ़ गिरा था। भगवान ने उसकी कैसी रक्षा की। जीवन के प्रति फिर से आस्था उत्पन्न होने लगी। टूटी हुई दीवार की ऊंचाई के साथ-साथ उसका ध्यान और ऊंचा गया। उसे ध्यान आया कि यह तो अस्पताल की दीवार है।...अभी-अभी वह अपनी पत्नी को भरती करा के बाहर निकला था। सबेरे से उसे दर्द उठ रहे थे, नई ज़िंदगी आने को थी। पत्नी, जिसे बच्चा होने वाला था... डॉक्टर, नर्स, मरीज़ों के पलंग...डॉक्टर ने उससे कहा था—'बाहर जाकर इंतिज़ार करो।' वह फिर बाहर आकर अस्पताल के नीचे ही कंकड़ों की कच्ची सड़क पर सिगरेट पीते हुए टहलने लगा था। आज उसने काम से भी छुट्टी ले रखी थी। वह बहुत ख़ुश था।—जब अचानक आसमान पर कानों के पर्दे फाड़ने वाला धमाका हुआ था। अंधा बना देने वाली तीन प्रकाश की किरणें कहीं से फूटकर चारों तरफ़ बिखर गईं। पलक मारते ही काले धुएं की मोटी चादर बादलों से घिरे हुए आसमान पर तेज़ी से बिछती चली गई। काले धुएं की बरसात होने लगी।



चमकते हुए विद्युत्कण सारे वातावरण में फैल गए थे। सारा शरीर झुलस गया; दम घुटने लगा था। सैकड़ों चीख़ें एक साथ सुनाई दी थी। इस अस्पताल से भी गई होंगी। दीवार उसी तरफ़ गिरी है। और उन चीख़ों में उसकी पत्नी की चीख भी ज़रूर शामिल रही होगी।...कोबायाशी का दिल तड़प उठा। उसे अपनी पत्नी को देखने की तीव्र उत्कंठा हुई।

होश में आने के बाद पहली बार कोबायाशी को अपनी पत्नी का ध्यान आया था। बहुत देर से जिसकी स्मृति खोई हुई थी, उसे पाकर कोबायाशी को एक पल के लिए राहत हुई। इससे उसकी उत्कंठा का वेग और भी तीव्र हो गया।

साल-भर पहले उसने विवाह किया था। एक वर्ष का यह सुख उसके जीवन की अमूल्य निधि बन गया था। दुःख, यातना और संघर्ष के पिछले चौबीस वर्षों के मरुस्थल-से जीवन में आज की यह महायंत्रणा जुड़कर सुख-शांति के एक वर्ष को पानी की एक बूंद की तरह सोख गई थी।

बचपन में ही उसके मां-बाप मर गए थे। एक छोटा भाई था, जिसके भरण-पोषण के लिए कोबायाशी को दस बरस की उम्र में ही बुज़ुर्गों की तरह मर्द बनना पड़ा था। दिन और रात जी तोड़कर मेहनत-मजूरी की, उसे शाहज़ादे की तरह पाल-पोसकर बड़ा किया। तीन बरस हुए वह फ़ौज में भरती होकर चीन की लड़ाई पर चला गया। और फिर कभी न लौटा।

अपने भाई को खोकर कोबायाशी ज़िंदगी से ऊब गया था। जीवन से लड़ने के लिए उसे कहीं से प्रेरणा नहीं मिलती थी। वह निराश हो चुका था। बेवा मकान-मालकिन की लड़की उसके जीवन में नया रस ले आई। उनका विवाह हुआ।...और उसके घर में एक नई ज़िंदगी आने वाली थी। आज सवेरे से ही वह बड़े जोश में था। उसके सारे जोश और उल्लास पर यह गाज गिरी! ज़हरीले धुएं की तपिश ने उसके अंतर तक को भून दिया था। वेदना असह्य हो गई थी—और चेतना लुप्त हो गई।

अपनी पत्नी से मिलने के लिए कोबायाशी सब खोकर तड़प रहा था। वह जैसे बच गया। वैसे ही भगवान ने शायद उसे भी बचा लिया हो; लेकिन दीवार तो उधर गिरी है।—"नहीं!"

—कोबायाशी चीख़ उठा। होश

में आने के बाद पहली बार उसका कंठ फूटा था। सारे शरीर में उत्तेजना की एक लहर दौड़ गई। स्वर की तेज़ी से उसके सूखे हुए निष्प्राण कंठ में ख़राश पैदा हुई। प्यास फिर होश में आई। कोबायाशी के लिए बैठा रहना असह्य हो गया। अंदरूनी ज़ोम का दौरा कमज़ोर शरीर को झिझोड़कर उठाने लगा। दीवार का सहारा लेकर वह अपने पागल जोश के साथ तेज़ी से उठा। वह दौड़ना चाहता था। दिमाग़ में दौड़ने की तेज़ी लिए हुए, कमज़ोर और डगमगाते हुए पैरों से वह धीरे-धीरे अस्पताल के फाटक की तरफ़ बढ़ा। फाटक टूटकर गिर चुका था। अंदर मलबा-मिट्टी ज़मीन की सतह से लगा हुआ पड़ा था। कुछ नहीं—वीरान! जैसे यहां कभी कुछ बना ही न था। सब मिट्टी और खंडहर! दूर-दूर तक वीरान—ख़ाली! ख़ाली! ख़ाली! उसकी पत्नी नहीं है। उसकी दुनिया नहीं है। वह दुनिया, जो उसने पच्चीस बरसों तक देखी, समझी और बरती थी, आज उसे कहीं भी नहीं दिखाई पड़ती। सपने की तरह वह काफ़ूर हो चुकी है।

मीलों तक फैली हुई वीरानी को देखकर वह अपने को भूल गया, अपनी पत्नी को भूल गया। इस महानाश के विराट शून्य को देखकर उसका अपनापन उसी में विलीन हो गया। उसकी शक्ति उस महाशून्य में लय हो गई। जीवन के विपरीत यह अनास्था उसे चिढ़ाने लगी। टूटी दीवार का सहारा छोड़कर वह बेतहाशा दौड़ पड़ा। वह ज़ोर-ज़ोर से चीख़ रहा था—"मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?"—मीलों तक उजड़े हुए हिरोशिमा नगर के इस खंडहर में लाखों निर्दोष प्राणियों की आत्मा बनकर पागल कोबायाशी चीख़ रहा था—"मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?"

***

कैंप अस्पताल में हज़ारों ज़ख़्मी और पागल लाए जा रहे थे। डॉक्टरों को फ़ुर्सत नहीं, नर्सों को आराम नहीं; लेकिन इलाज कुछ भी नहीं हो रहा था। क्या इलाज करे? चारों ओर चीख़-चिल्लाहट, दर्द और यंत्रणा का हंगामा! "गोरा–दुश्मन! ख़ुदा–दुश्मन! बादशाह–दुश्मन!"–पागलपन के उस शोर में हर तरफ़ अपने लिए दर्द का, अपने परिवार और बच्चों के लिए सवाल था, जिसकी यह सज़ा उन्हें मिली है! और दुश्मनों के लिए नफ़रत थी, जिन्होंने बिना किसी अपराध के उनकी जान ली।

अस्पताल के बरामदे में एक मरीज़ दहन फाड़कर चिल्ला उठा—"मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?"

अस्पताल के इंचार्ज डॉक्टर सुज़ुकी इन तमाम आवाज़ों के बीच में खोए हुए खड़े थे। वह हार चुके थे। कल से उन्हें नींद नहीं, आराम नहीं, भूख-प्यास नहीं। ये पागलों का शोर, दर्द, चीख़, कराह! उनका दिल, दिमाग़ और जिस्म थक चुका था। अभी थोड़ी देर पहले उन्हें ख़बर मिली थी, नागासाकी पर भी बम गिराया गया। वे इससे चिढ़ उठे थे—"क्यों नहीं बादशाह और वज़ीर हार मान लेते? क्या अपनी झूठी आन के लिए वह जापान को तबाह कर देंगे?" उन्हें दुश्मनों पर भी ग़ुस्सा आ रहा था "इन्हें क्यों मारा गया? ये किसी के दुश्मन नहीं थे। इन्हें अपने लिए साम्राज्य की चाह नहीं थी। अगर इनका अपराध है, तो केवल यही कि यह अपने बादशाह के मजबूरन बनाए हुए ग़ुलाम हैं। व्यक्ति की सत्ता के शिकार हैं। संस्कारों के ग़ुलाम हैं।...दुश्मन इन्हें मारकर ख़ुश है। जापान की निर्दोष और मूक जनता ने दुश्मनों का क्या बिगाड़ा था, जो उन पर एटम बम बरसाए गए? विज्ञान की नई खोज की शक्ति आज़माने के लिए उन्हें लाखों बे-ज़बान बे-गुनाहों की जान लेने का क्या अधिकार था? क्या यह धर्म युद्ध है?—सदादर्शों के लिए लड़ाई हो रही है? एटम का विनाशकारी प्रयोग विश्व को स्वतंत्र करने की योजना नहीं, उसे ग़ुलाम बनाने की ज़िद है। ऐसी ज़िद, जो इंसान को तबाह करके ही छोड़ेगी।... और इंसानियत के दुश्मन कहते हैं कि एटम का आविष्कार मानव-बुद्धि की सबसे बड़ी सफलता है!...हिः पागल कहीं के!...

नर्स आई। उसने कहा—"डॉक्टर! सेंटर से ख़बर आई है, और नए मरीज़ भेजे जा रहे हैं।"

डॉक्टर सुज़ुकी के थके चेहरे पर सनक-भरी सूखी हंसी दिखाई दी। उन्होंने जवाब दिया—

"इन नए मुर्दा मरीज़ों के लिए नई ज़िंदगी कहां से लाऊंगा, नर्स? विनाश-लोलुप स्वार्थी मनुष्य शक्ति का प्रयोग भी जीवन नष्ट करने के लिए ही कर रहा है। फिर निर्माण का दूसरा ज़रिया ही क्या रहा? फेंक दो उन ज़िंदा लाशों को, हिरोशिमा की वीरान धरती पर!—या उन्हें ज़हर दे दो! अस्पताल और डॉक्टरों का अब दुनिया में कोई काम नहीं रहा।"

नर्स के पास इन फ़िज़ूल की बातों के लिए समय नहीं था।—नए मरीज़ आ रहे हैं। सैकड़ों अस्पताल में पड़े हैं। वह डॉक्टर पर झुंझला उठी—

"यह वक़्त इन बातों का नहीं है डॉक्टर! हमें ज़िंदगी को बचाना है। यह हमारा पेशा है, फ़र्ज़ है। एटम की शक्ति से हारकर क्या हम इंसान और इंसानियत को चुपचाप मरते हुए देखते रहेंगे? चलिए, आइए, मरीज़ों को इंजेक्शन लगाना है, आगे का काम करना है।"

नर्स डॉक्टर सुज़ुकी का हाथ पकड़कर तेज़ी से आगे बढ़ गई। ■■

हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) :

मानवतावाद के अग्रदूत

आख़िरी पन्ना



डॉ. रफ़ीक़ अहमद

वर्तमान काल में हम जिन परिस्थितियों से गुज़र रहे हैं, वे अत्यन्त जटिल और भयावह हैं। इन्सानों के बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं। व्यक्ति स्वार्थ और धन लोलुपता के जाल में फंसा हुआ है। समाज में हिंसा, हत्या, वासना, बलात्कार, ईर्ष्या, द्वेष और भोगवादी मनोवृत्ति का वर्चस्व है। जबकि वास्तविकता यह है कि स्वार्थ, वासना और धन-दौलत से आदमी की भूख थोड़े समय के लिये तो मिट जाती है परन्तु उससे मन को स्थायी सुख-चैन और आराम व सुकून प्राप्त होने वाला नहीं है।

चूंकि इन्सान ईश्वर के प्रति वास्तविक प्रेम और उसके सामीप्य की चाह से वंचित है, इसलिये वह जीवन के मौलिक आनन्द और सुख से वंचित है। सच्ची मानवता से वंचित है। आज जिस इन्सान को ईश्वर का सच्चा बन्दा होना चाहिये था, वह दौलत का पुजारी और अपनी मनोकामनाओं का दास बना हुआ है। वह नहीं जानता कि स्थायी सुख-चैन और आराम व सुकून धार्मिक शिक्षाओं में ही निहित है। संसार में समय-समय पर मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये महापुरुषों तथा ईशदूतों का आविर्भाव होता रहा है। जिन्होंने अपनी असीम निष्ठा, दूरदर्शिता, ईश्वर पर अटूट विश्वास, तपस्या और उपासना से मानव समाज का मार्गदर्शन एवं कल्याण किया।

आम हालात में जब जीवन सरिता शान्तिपूर्वक बह रही हो, तो प्रत्येक व्यक्ति एक प्रकार के सुख एवं शान्ति का अनुभव करता है, क्योंकि भूतल में छिपी हुई गन्दगी और मलतत्व उसकी आंखों से ओझल रहते हैं। ऊपर का साफ़ एवं स्वच्छ जल नीचे बैठी हुई गन्दगियों को जानने का अवसर नहीं देता, परन्तु जब नदी में तूफान उठता है, तो उथल-पुथल के कारण नीचे की गन्दगियां उभर कर धरातल पर बहने लग जाती हैं। उस समय अन्धों के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति अपनी आंखों से उनका अवलोकन कर सकता है कि इस जल में क्या-क्या बह रहा है।

सभ्य मानव समाज के निर्माण और शांति की स्थापना में उनके त्याग, तपस्या और बलिदान का बड़ा योगदान है। उनके एहसानों से मानवता कभी मुक्त नहीं हो सकती। उन महान विभूतियों में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) का स्थान अग्रणी है। उनकी विश्व-बन्धुत्व, समता, समानता और शान्ति एवं भाईचारे के सन्देशों ने इन्सानों के दिलों को प्रकाशमान किया और समस्त मानव जाति से प्रेम और उनकी सेवा तथा मानवीय श्रेष्ठता पर सबसे अधिक बल दिया, परन्तु यह भी एक कटु सत्य है कि उनके असीम योगदान और सहयोग को नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है।

ईशदूत, सन्देष्टा एवं सद्पुरुष ईश्वर की दया और उसकी असीम कृपा के पात्र हैं, जो प्रत्येक काल एवं देश में ईश्वर की ओर से लोगों को मानवता का संदेश देने तथा लोगों को सच्चे रास्ते पर चलाने हेतु आते रहे।

दोस्तो! आम हालात में जब जीवन सरिता शान्तिपूर्वक बह रही हो, तो प्रत्येक व्यक्ति एक प्रकार के सुख एवं शान्ति का अनुभव करता है, क्योंकि भूतल में छिपी हुई गन्दगी और मलतत्व उसकी आंखों से ओझल रहते हैं। ऊपर का साफ़ एवं स्वच्छ जल नीचे बैठी हुई गन्दगियों को जानने का अवसर नहीं देता, परन्तु जब नदी में तूफ़ान उठता है, तो उथल-पुथल के कारण नीचे की गन्दगियां उभर कर धरातल पर बहने

लग जाती हैं। उस समय अन्धों के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति अपनी आंखों से उनका अवलोकन कर सकता है कि इस जल में क्या-क्या बह रहा है।

यही वह समय होता है कि मानव उस उद्गम का पता लगाये जहां से गन्दगियां आ रही हैं। इनका स्रोत क्या है? और इन स्रोतों को बंद करने का उपाय सोचे। यदि इस असाधारण अवस्था में भी वह चैन से बैठा रहे, सुख का अनुभव करता रहे, खाओ, पियो और मौज उड़ाओ का जीवन व्यतीत करता रहे, तो समझ लेना चाहिए कि वह मानव के रूप में दानव है, उसको मानव जाति से कोई प्रेम नहीं है, उसे मानवता से कोई लगाव नहीं है वह तो एक पशु की तरह जीवन व्यतीत कर रहा है।

दोस्तो! आज जिस युग में हम आप जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उसमें विषम मलतत्व उभर कर सामने आ गए हैं। राष्ट्रों तथा जातियों के बीच घोर संघर्ष है। अधिकतर राष्ट्र घृणित अवगुणों का प्रदर्शन कर रहे हैं। अन्याय, क्रूरता, निर्दयता, अत्याचार, झूठ, छल-कपट, मिथ्या, भ्रष्टाचार, निर्लज्जता, वचन-भंग, कामवासना, बलात्कार और ऐसे ही अपराध आज मात्र व्यक्तिगत अपराध नहीं रहे, बल्कि राष्ट्रीय आचरण एवं नीति का रूप धारण कर रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र नफ़रत की ज्वाला में जल रहा है। मानव, दानव बन चुका है। मात्र धन के लिए पुत्र अपने पिता का, पुत्री अपनी माता का और भाई अपनी बहन का अपमान कर रहे हैं।

आज मानव जाति के अभूतपूर्व प्रगति कर लेने के बावजूद चारों ओर अशान्ति, अव्यवस्था और अनैतिकता का साम्राज्य है। एक समाज दूसरे समाज से लड़ रहा है, एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों को संदिग्ध दृष्टि से देख रहे हैं। आज के इस कथित आधुनिक युग में मानव ने अपनी मानवता खो दी है।

आज मानव जाति पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, ग्लानि के भयानक जाल में फंसी हुई है। न उसे अपने कर्तव्य का ज्ञान है, न ही अपने लक्ष्य का, न उसे अपनी अवनति पर खेद है, न दुष्कर्म पर आत्म-ग्लानि। मानव की इस पशुता एवं दानवता पर कैसे रोक लगाई जाए? इसका निवारण कैसे किया जाए? कभी हमने एक क्षण के लिए भी इन भयानक परिस्थितियों पर विचार किया कि इस अमानवीय प्रवृत्ति का कारण क्या है।

संसार में समय-समय पर मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये महापुरुषों तथा ईशदूतों का आविर्भाव होता रहा है। जिन्होंने अपनी असीम निष्ठा, दूरदर्शिता, ईश्वर पर अटूट विश्वास, तपस्या और उपासना से मानव समाज का मार्गदर्शन एवं कल्याण किया। सभ्य मानव समाज के निर्माण और शांति की स्थापना में उनके त्याग, तपस्या और बलिदान का बड़ा योगदान है। उनके एहसानों से मानवता कभी मुक्त नहीं हो सकती। उन महान विभूतियों में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का स्थान अग्रणी है। उनकी विश्व-बन्धुत्व, समता, समानता और शान्ति एवं भाईचारे के सन्देशों ने इन्सानों के दिलों को प्रकाशमान किया और समस्त मानव जाति से प्रेम और उनकी सेवा तथा मानवीय श्रेष्ठता पर सबसे अधिक बल दिया, परन्तु यह भी एक कटु सत्य है कि उनके असीम योगदान और सहयोग को नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है।

बन्धुवर! इसका एक मात्र कारण यह है कि मानव भौतिकवादी हो गया है। उसका धर्म से तनिक भी संबंध नहीं रहा। वह अपने पालनहार को भूल चुका है। उसका हृदय सदैव सांसारिक भोग विलास में डूबा रहता है।

दोस्तो! मानवता न अपने आप जन्म लेती है और न ही अपने आप मरा करती है। मानवता का तो एक स्रोत है जिससे मानवता जन्म लेती है और जब तक उस स्रोत से मानवता का सम्बन्ध बना रहता है वह फलती-फूलती रहती है और जब उस स्रोत से उसका सम्बंध टूट जाता है, तो मानवता भी दम तोड़ देती है। वह स्रोत क्या है? धार्मिक विश्वास ही मानवता का स्रोत है और भौतिकवादी प्रवृत्ति दानवता का। धार्मिक विश्वास यह है कि इस सृष्टि का एक जन्मदाता एवं पालनहार है और यह विश्वास है कि ईश्वर मानव जीवन के पथ-प्रदर्शन हेतु प्रत्येक जाति एवं देश में अपना सन्देष्टा भेजता रहा है। उन्हीं के बताए हुए रास्ते पर चलकर मानव सफल जीवन व्यतीत कर सकता है।

दूसरा विश्वास यह है कि इस जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है, जहां ईश्वर पूर्ण जीवन के क्रियाकलापों का हिसाब लेगा और कर्मों के आधार पर पुरस्कृत एवं दंडित करेगा। यही विश्वास ही मानवता का आधार है। इसी विश्वास से ही मानवता पैदा हो सकती है और जीवित रह सकती है।

कर्मफल पर विश्वास, परलोक पर विश्वास व्यक्ति के अन्दर ज़िम्मेदारी का

एहसास पैदा करता है और इसी एहसास के अनुसार जो जीवन होगा वही मानवता का जीवन होगा। वह उचित एवं अनुचित का ख़्याल रखेगा। न्याय एवं अन्याय का ख़्याल रखेगा। ईमानदारी एवं बेईमानी का ख़्याल रखेगा वह रिश्वत लेते हुए, ग़बन करते हुए, किसी का माल हड़पते हुए तथा अशान्ति एवं फ़साद फैलाते हुए डरेगा। वह ज़ुल्म एवं अत्याचार करते हुए डरेगा। उसका जीवन 'ख़ुदा रुख़ी' (ईश्वरयुक्त) होगा 'ख़ुद रुख़ी' (स्वपोषी) नहीं होगा। वह अपने आपको ईश्वर के आदेशों के समक्ष बिछा देगा।

इसके विपरीत जब एक व्यक्ति का यह विश्वास हो जाए कि कोई ईश्वर नहीं है, कोई ईशदूत पथ-प्रदर्शन हेतु नहीं आया, इस जीवन के बाद और कोई जीवन नहीं है, जहां कर्मानुसार फल मिलेगा। खाओ, पियो और मौज उड़ाओ यही जीवन का लक्ष्य है, जो कि भौतिकवादी विचारधारा की देन है। यह सिद्धान्त या विश्वास मानव को दानव क्यों न बना दे? वह क्यों न पशु बन जाएगा? वह क्यों उचित एवं अनुचित को मानेगा? वह अपना लक्ष्य अत्याचार से, बेईमानी से, रिश्वत से, ग़बन से, अन्याय से क्यों न पूरा करेगा? कौन है, जो उसकी बुराइयों को रोक दे?

आज सारे संसार में भौतिकवाद का बोलबाला है और इसी भौतिकवाद के नतीजे में पाशविकता ज़ोर पकड़ती जा रही है। आज का युग, ऐसा प्रतीत होता है कि असत्य का युग है। हर जगह असत्य विराजमान है इसका कारण धार्मिक अज्ञानता और धर्म की प्रभावहीनता है। धर्म ही सिखाता है कि न्याय क्या है और अन्याय क्या है, विहित क्या और वर्जित क्या है। आज धर्म सत्ताहीन है और भौतिकवाद सत्तावान है। क़ानून की किताबें मानव को पूर्ण रूप से बुराई से नहीं रोक सकतीं। बुराई तभी रुक सकती है, जब मानव की सोच बदल जाए। उसके अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा हो जाए। उसके जीवन का उद्देश्य बदल जाए। इस संसार में उसका क्या स्थान है, यह मालूम हो जाए और यह सब तभी सम्भव है जब उसे सत्य का ज्ञान हो जाए।

कहने का आशय यह है कि धर्म ही मानवता की शिक्षा दे सकता है। संसार के प्रत्येक धर्म एवं जीवन सिद्धान्तों में दूसरी बातों को लेकर तो मतभेद हो सकता है, परन्तु मानवता एवं नैतिकता के सम्बंध में किसी प्रकार का कोई मतभेद नहीं है। प्रत्येक धर्म में इस बात का उपदेश मिलता है कि मानव को नैतिकता पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए। नैतिकता या मानवता समस्त धर्मों की अमूल्य पूंजी है। ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, अहंकार और स्वार्थ जैसे भयानक रोगों से मुक्त होना और सत्यवादिता, सदाचारिता, सत्यनिष्ठा और शालीनता जैसे गुणों से परिपूर्ण होना, छोटों से प्रेम एवं स्नेह तथा बड़ों का आदर करना, निर्बलों को सहारा देना, अनाथों एवं विधवाओं की मदद करना, ग़रीबों और मुहताजों के काम आना, लोगों के अधिकारों को पूरा करना, अत्याचारियों को अत्याचार एवं अन्याय से रोकना एवं पीड़ितों का साथ देना, ये वे श्रेष्ठतम नैतिक मूल्य हैं जिनके बारे में धर्मों के बीच कोई मतभेद नहीं है, ये समस्त धर्मों की शिक्षाओं के प्रमुख अंश हैं। इन शिक्षाओं के बिना धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

भाईयो! जब तक मानव भौतिकवाद के बजाए ईश्वरवाद को न अपनाएगा, मानवता जीवित नहीं हो सकती। जो चीज़ अपने जीवन-स्रोत से अलग हो जाए वह जीवित नहीं रह सकती। यदि उसको जीवित करना है, तो उसे उसके जीवन स्रोत से पुनः जोड़ना होगा।

■■

बचो अत्याचार से, क्योंकि अत्याचार से क़ियामत के दिन कालिमा छा जाएगी। और लोभ और कृपणता से बचो, क्योंकि लोभ और कृपणता ने तुम से पहले लोगों को विनष्ट किया, उन्होंने इसके कारण रक्तपात किया और हराम को हलाल ठहरा लिया।" (हदीस : मुस्लिम)



वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा
किया, फिर (जीवन की) एक अवधि
निश्चित कर दी और उसके यहाँ
(क़ियामत की) एक अवधि और
निश्चित है; फिर भी तुम
संदेह करते हो!

(क़ुरआन, 6:2)

---

with best compliment from

J. I. H. Beawar, Rajasthan

KANTI Monthly, New Delhi
NOVEMBER 2024
Posted on 20-21 October 2024
Published on 18 October 2024
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52

कहो, "ऐ अल्लाह, राज्य के स्वामी !
तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे
राज्य छीन ले, और जिसे चाहे इज़्ज़त
(प्रभुत्व) प्रदान करे और जिसको चाहे
अपमानित कर दे। तेरे ही हाथ में
भलाई है। निस्संदेह तुझे हर चीज़ की
सामर्थ्य प्राप्त है।"

(कुरआन, 3:26)

A Well Wisher

J.I.H.
Shastri Nagar,
Jaipur (Raj.)